Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसकी आपको प्रतीक्षा थी, छप रहा है—

# सत्यार्थप्रकाश

☐ एक अभिनव संस्करण

☐ आधुनिक हिन्दी रूपान्तर

महर्षि के अमर ग्रन्थ के रूपान्तरकार हैं—आर्यजगत् के
सुप्रसिद्ध विद्वान्, लेखनी के धनी, सम्पादन कला में प्रवीण

## स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

जैसे सत्यार्थप्रकाश के गुजराती, बंगाली, मराठी, तेलगु, असमिया आदि भाषाओं में अनुवाद हुए हैं, उसी प्रकार यह संस्करण आधुनिक हिन्दी रूपान्तर है। पाठ पढ़कर भाव विभोर हो उठेंगे। जो तेरहवें और चौदहवें समुल्लासों की हिन्दी बड़ी टेढ़ी-मेढ़ी है, क्योंकि उस समय बाइबल और कुरान के भाष्य मुहावरेदार भाषा में उपलब्ध नहीं थे। अब इन दोनों समुल्लासों की भाषा को भी आधुनिक हिन्दी का रूप दे दिया गया है।

आज तक जितने भी संस्करण छपे हैं, उन सभी से सुन्दर, अनेक टिप्पणियों से विभूषित, कठिन शब्दों के अर्थ से युक्त, यह संस्करण है।

अपने स्वाध्याय के लिए, अपने मित्रों सम्बन्धियों को भेंट देने के लिए एक प्रति अवश्य खरीदिए। इसे लेकर आप पछतायेंगे नहीं।


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## बोध-कथा

# सम्मान शौर्य का

दक्षिणी भारत में वल्लारी एक बहुत ही छोटा-सा राज्य था। मलबाई देसाई उसकी शासिका थीं, उनके पति की मृत्यु हो चुकी थी, वह विधवा थीं, परन्तु शौर्य की जीवन्त प्रतिमा। तत्कालीन भारत के वीर योद्धा छत्रपति शिवाजी की सेनाओं ने वल्लारी के छोटे राज्य पर भीषण आक्रमण किया। दिल्ली के मुगल सम्राट् औरंगजेब और उसकी सल्तनत को नाकों चने चबवाने वाले वीर मराठा सैनिकों के बड़े जमाव के सम्मुख मुट्ठी भर वल्लारी सैनिक कब तक लड़ते! बहुसंख्यक मराठा सेना के सम्मुख छोटी-सी वल्लारी सैनिक टुकड़ी कब तक टिकती, परन्तु उसने हार न मानी, जब तक आखिरी वल्लारी सैनिक के पास हथियार रहे, प्राण जीवित रहे, परन्तु वह जूझती रही, लड़ती रही, परन्तु उसने हार न मानी। सैनिकों के मारे जाने पर, घायल हो जाने या बन्दी बना लिये जाने पर देखा गया कि जूझने वाले सिपाहियों में वहां की शासिका रानी मलबाई भी थीं। रानी मलबाई एक बन्दिनी के रूप में पूरे सम्मान के साथ छत्रपति शिवाजी के सामने लायी गयीं।

रानी मलबाई को जब पूरे राजकीय सम्मान के साथ छत्रपति शिवाजी के सामने लाया गया, तब रानी मलबाई सिंहिनी की तरह फुफकार उठीं, ओजस्वी शब्दों में बोल उठीं—"छत्रपति, एक अकेली नारी होने के कारण क्या मेरा यह परिहास शोभनीय है? तुम्हारा राज्य बड़ा है, हमारा राज्य छोटा है, पहले हमारा राज्य स्वतन्त्र था, अपने राज्य और अपनी आजादी की रक्षा के लिए पूरी शक्ति से हम ने लोहा लिया, इसमें—इस लड़ाई—सम्मान और आजादी की रक्षा के लिए किए संघर्ष में हम ने तन, मन, धन सर्वस्व की बाजी लगा दी, आप हमें - हमारी लड़ाई और विरोध के लिए शत्रु-बन्दी को मृत्युदण्ड देने के स्थान पर यह सम्मान का व्यर्थ का नाटक क्यों कर रहे हो?"

वीर सिंहिनी नारी की फुफकार और आह्वान से छत्रपति शिवाजी विचलित हो उठे। वह सिंहासन से उठे, हाथ जोड़ कर उस वीर नारी मलबाई रानी से बोले—"वीर माँ, आपका वल्लारी पहले भी स्वाधीन था अब भी स्वतन्त्र है। आप का आक्रान्ता शिवा आपका शत्रु नहीं, आपका पुत्र है। मैं आपका पुत्र हूँ। तेजस्विनी माता जोजाबाई के आकस्मिक स्वर्गवास के बाद मैं मातृविहीन हो गया था, कोशिश थी कि कहीं माता का संरक्षण-आश्रय मिल जाए, आज आप में उसी तेजस्विनी माता के दर्शन हुए। माँ, आप धन्य हैं, आपको शिवा के प्रणाम-वन्दन स्वीकार हों।"

शौर्यशिखा सर्पिणी के तुल्य फुफकारती रानी मलबाई शौर्यशिखा से तुरन्त वत्सलमयी बन गयीं, उन्होंने आगे बढ़कर वीर माता के तुल्य शिवा को अंक में भर लिया।

प्रस्तुति—**नरेन्द्र विद्यावाचस्पति**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

# वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४४, अंक ८ वार्षिक मूल्य : बीस रुपये मार्च १९९५

सम्पा० अजयकुमार आ० सम्पादक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सामान्य जिज्ञासु के लिए उपनिषदों की देन—४

## सृष्टि सम्बन्धी छह जिज्ञासाएं: प्रश्न उपनिषद् के समाधान

### पिण्ड से ब्रह्माण्ड तक पूर्ण ओंकार की साधना से परमतत्त्व की सिद्धि

हजारों वर्ष पहले कुछ जिज्ञासु इकट्ठे हुए। ये छओं जिज्ञासु ब्रह्म के बारे में अपने प्रश्नों का उत्तर चाहते थे। उन्हें यह जानकारी मिली कि उनकी ब्रह्म या सृष्टि सम्बन्धी जो भी जिज्ञासाएं हैं। उनका समुचित समाधान उस समय के एक महान् चिन्तक एवं विचारक पिप्पलाद ऋषि ही कर सकेंगे। ये छः जिज्ञासु थे— भारद्वाज गोत्र में पैदा हुआ सुकेश, शिवि का पुत्र सत्यकाम, सूर्य का पोता गार्ग्य, अश्वल का पुत्र कौशल्य, भृगुगोत्री वैदर्भि और कत्य का पुत्र कबन्धी। प्राचीन परम्परा के अनुसार छओं जिज्ञासुओं के हाथों में सूखी समिधाएं थीं। जिस प्रकार अग्नि से सूखी समिधाएँ प्रज्वलित की जाती हैं, उसी प्रकार जिज्ञासु अपना शुष्क चित्त एक सच्चे गुरु द्वारा दी गई ज्ञानाग्नि से प्रदीप्त करना चाहते थे। वही समिधा प्रज्वलित हो सकती है, जो गीली न हो, जिज्ञासु भी जब गुरु के पास पहुंचे तब उन्होंने अपना अहंकार रूपी भीगापन पीछे छोड़ दिया था। गुरु का नाम पिप्पलाद था. पिप्पलाद उन्हें इसलिए कहा जाता था कि वह उच्चकोटि के ज्ञानी-ध्यानी होने के बावजूद पिप्पल की कलियां खाकर जीवन बिताते थे। स्पष्टतया वह स्वल्पाहारी थे, जो कुछ भी थोड़ा बहुत मिल जाता था, उससे उनका जीवन चल रहा था।

छओं जिज्ञासु पिप्पलाद ऋषि की कुटिया पर पहुंचे और उनसे



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी ब्रह्म सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान करना चाहा । ऋषि ने उनकी सारी बात सुनकर कहा–''मुझे प्रतीत होता है कि आप तप रूपी शारीरिक साधना कर चुके हैं, विषय वासनाओं से मुक्त ब्रह्मचर्य रूपी मानसिक साधना कर चुके हैं और आप सब तरह के संकल्प-विकल्प छोड़कर पूरी श्रद्धा से आए हैं, इस सब के बावजूद मेरी इच्छा है कि आप वर्ष भर तक आश्रम में अधिक तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा के साथ निवास करें । उसके बाद आप अपनी इच्छा से प्रश्न पूछें, उस समय आपकी जिज्ञासाओं का जो उत्तर मुझे मालूम होगा तो मैं सब कुछ बतला दूंगा । ऋषि के वचन सुनकर छओं जिज्ञासु पूरी तपस्या, ब्रह्मचर्य और पूर्ण श्रद्धा से वर्ष भर तक ऋषि पिप्पलाद के आश्रम में रहे । वर्ष बीतने पर सब से पहले कत्य के पुत्र कबन्धी कात्यायन ने ऋषि के समीप पहुंच कर जिज्ञासा प्रकट की– ''गुरु महाराज, क्या आप बतलाएंगे यह सारा उत्पन्न हुआ नानाविध संसार कैसे पैदा हुआ ? यह सारी प्रजा किससे उत्पन्न हुई ? '' (**भगवन् कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्त इति ?**)

## यह सृष्टि कैसे पैदा हुई ?

जिज्ञासु कबन्धी कात्यायन को समझाते हुए पिप्पलाद ऋषि बोले–''इस चराचर जगत् के नियन्ता प्रजापति ने प्रजा-सृष्टि उत्पन्न करने की जब कामना या इच्छा की, तब उन्होंने तप किया और तप करके रयि और प्राण नाम के मिथुन या जोड़े को उत्पन्न किया और यह समझ लिया कि यह मिथुन या जोड़ा ही अब नानारूप जड़-चेतन सृष्टि– अनेक प्रकार की प्रजा उत्पन्न करेगा । ब्रह्मा ने रयि सोमरूप अन्न और प्राण यानी भोक्ता अग्नि रची । द्वित्व या दो से यह सृष्टि बनी हुई है । वह एक से नहीं बनी। अरस्तु ने सृष्टि की उत्पत्ति जड़ तथा चेतन से बतलाई है । वेदान्त में इन्हें नाम और रूप कहा गया है । इस रयि-प्राण को शरीर या आत्मा, प्रकृति तथा परमात्मा का मिथुन या जोड़ा कहा जा सकता है । सम्बन्धित मन्त्र यह है–

**तस्मै स हो वाच प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत स तपस्तप्त्वा स मिथुनमुत्पादयते । रयिं च प्राणं चेत्येतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यत इति ॥४॥**

ऋषि पिप्पलाद विश्व में रयि तथा प्राण का चित्रण करते हुए कई दृष्टान्त देते हैं– सूर्य प्राण शक्ति का प्रतीक है, चन्द्र रयि शक्ति का सूचक। भोक्ता शक्ति बढ़ाने वाला सूर्य है, तो भोग्य शक्ति बढ़ाने वाला चन्द्र है। प्राणि मात्र के लिए सूर्य प्राण है, वही उनमें जीवन का संचार करता है,



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस जीवन का जिससे हम रयि बन कर संसार का उपयोग करते हैं। सूर्य के द्वारा प्राणशक्ति का संचार कैसे होता है, इसका उल्लेख करते हुए पिप्पलाद ऋषि कहते हैं– प्रातःकाल जब सूर्य उदय होकर पूर्व दिशा में प्रवेश करता है, तब वह अपनी प्राणशक्ति अपनी किरणों में समाविष्ट कर विश्व में फैला देता है, जिससे हम सूर्य की किरणों से सूर्य की प्राणशक्ति अपने अन्दर लेकर जीवन का आनन्द ले सकें । हम रयि हैं, सूर्य की किरणें प्राण हैं । चाहे हम दक्षिण में हों, पश्चिम में हों, उत्तर में हों, नीचे हों या ऊपर हों, चाहे इन दिशाओं के मध्य में हों, सूर्य की किरणें सर्वत्र अपनी प्रकाश-शक्ति द्वारा प्रकाश बिखरेती हैं । इससे यह स्पष्ट होता है कि सूर्य अपनी किरणों में प्राणशक्ति धारण किए रहता है। उपनिषत् का सम्बद्ध छठा मन्त्र इस प्रकार है–

**अथ आदित्यः उदयन् प्राचीं दिशं प्रविशति । तेन प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते । यत् दक्षिणां, यत् प्रतीचीं, यत् उदीचीं यत् अधः यत् ऊर्ध्वं, यत् अन्तरा दिशः । यत् सर्वं प्रकाशयति तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते ॥६॥**

ऋषि पिप्पलाद बतलाते हैं– सूर्य की यही वैश्वानर तथा विश्वरूप प्राणशक्ति संसार में अग्निरूप में प्रकट होती है । वेद की ऋचा बतलाती है– द्युलोक की सौर शक्ति ही भू-लोक में अग्नि शक्ति बन जाती है । अग्नि सूर्य का ही छोटा रूप है । सूर्य प्राणशक्ति का संचार करता है तो अग्नि भी प्राणशक्ति का संचार करता है । ऋषि पिप्पलाद बतलाते हैं– सूर्य की प्राणशक्ति से विश्व का स्वरूप चमक उठता है। प्राणशक्ति हरिण है, वह 'हरति' जीवन का हरण कर लेती है, यह प्राणशक्ति न हो तो जीवन नहीं रहता, वही सब जगह मौजूद है, वही विश्व का परम अयन या आश्रय है, उसी प्राणशक्ति के सहारे सम्पूर्ण विश्व टिका हुआ है, परम ताप वही एकमात्र ज्योति है, वह हजारों किरणों और सैकड़ों रूपों वाली है । वही सूर्य प्रजाओं का प्राण ज्योति स्वरूप है । पिप्पलाद ऋषि ऋग्वेद का यह मन्त्र प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करते हैं–

**विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तम् ।**
**सहस्त्ररश्मिः शतधा वर्त्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥८॥**

सूर्य की प्राणशक्ति से विश्व का स्वरूप खिलता है । प्राणशक्ति हरिण रूप है, वह न हो तो जीवन नहीं रहता । वही हर स्थान में विद्यमान है, वही विश्व का परम आश्रय है, वह न हो तो जीवन नहीं रहता । वही एकमात्र ज्योति परम ताप वाली, सहस्त्र किरणों वाली है, उसके अनेक रूप हैं । वही सूर्य समस्त प्राणियों का जीवन है । इस सूर्य के



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूप में वह प्राणशक्ति प्रकट हो रही है ।

वस्तुतः सूर्य के बड़प्पन तथा समस्त लौकिक सांसारिक कार्यों में उसके आधारभूत योगदान को समझकर हम सृष्टिकर्त्ता परमात्मा के सर्वत्र और सर्वशक्तिमान् स्वरूप को भली प्रकार समझ सकते हैं । ऋषि पिप्पलाद बतलाते हैं कि सृष्टि का आदि कारण ही प्रजापति है । उन्होंने यह भी स्पष्ट प्रतिपादित किया कि यह आदि कारण प्रजापति अकेला कुछ नहीं कर सकता, उसे मिथुन या जोड़े का सहारा लेना पड़ता है। इसी से संसार का यह चक्र निरन्तर चल रहा है । ऋषि ने इस जोड़े के नाम– 'प्राण' भोक्ता और 'रयि' भोग्य प्रयुक्त किया जाने वाला, दिए हैं । पिप्पलाद ऋषि स्पष्ट करते हैं कि सृष्टि को साकार रूप देने के लिए, उसे व्यवस्थित रूप देने के लिए सूर्य-चन्द्र के जोड़े से काल की व्यवस्था होती है–वर्ष, मास, रात-दिन के व्यवहार से लोक में संसार का व्यवहार चलता है । ऋषि संवत्सर को प्रजापति कहते हैं, इस संवत्सर वर्ष के दो मार्ग हैं– दक्षिण तथा उत्तर । सूर्य छः मास तक दक्षिणायन में रहता है और छः मास तक उत्तरी क्षेत्र में रहता है । दक्षिणायन तथा उत्तरायण मिलकर ही संवत्सर या वर्ष बनता है । ऋषि बतलाते हैं कि उत्तरायण में भोक्ता-आत्मा की ज्ञानादि शक्ति बढ़ती है, भोग से चित्तवृत्ति हटाने वाले योग वृत्ति के साधक तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धापूर्वक विद्याभ्यास आदि से आत्मज्ञान की साधना करते हैं, वे संसार रूपी चक्र में बार-बार नहीं घूमते । जीवात्मा का ज्ञान प्रजापति का स्वरूप समझने में सहायता देता है ।

ऋषि जिज्ञासु की समस्या या जिज्ञासा– कहां से ये प्राणी-प्रजाएं उत्पन्न होती हैं, का समाधान करते हुए बतलाते हैं, अन्न ही प्रजापति है। जैसे– संवत्सर, मास अहोरात्र प्रजापति की रचना की व्यवस्था करते हैं, वैसे ही निश्चय से अन्न भी प्रजा का पालन करता है--अन्न प्रजापति है । अन्न से वीर्य बनता है, वीर्य से ही सन्तान होती है । ऋषि पिप्पलाद की विचार-धारा के अनुसार वीर्य प्राण है, प्रजा सन्तान रयि है । सम्बन्धित मन्त्र देखिए–

**अन्नं वै प्रजापतिः, ततः ह वै तद् रेतः ।**
**तस्मात् इमाः प्रजा प्रजायन्ते इति ॥१४॥**

पिप्पलाद ऋषि के अनुसार वीर्य-प्राण है और प्रजा रयि या सन्तान है । वीर्य धनशक्ति-प्राणशक्ति है, उससे उत्पन्न होने के कारण प्रजा भोग्य ऋण शक्ति है । इस प्रकार ऋतुओं और गृहस्थ की मर्यादा की दृष्टि में प्रजा उत्पन्न करना प्रजापति-व्रत है । अगली ऋचा में पिप्पलाद ऋषि बतलाते हैं--जो लोग प्राण तथा रयि दोनों का समन्वय करके जीवन व्यतीत करते हैं--प्रजापति व्रत का पालन करते हुए--यह समझते हुए कि न प्राणशक्ति ही अन्तिम तत्त्व है और न रयि-शक्ति ही अन्तिम तत्त्व है– इन दोनों का


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समन्वित व्यवस्थित मेल ही जीवन का सच्चा रहस्य है । वे तपस्या, ब्रह्मचर्य एवं सत्य की मर्यादा का पालन करते हुए ब्रह्मलोक की प्राप्ति करते हैं । सम्बन्धित ऋचा इस प्रकार है–

**तत् ये प्रजापतिव्रतं चरन्ति, ते मिथुनम् उत्पादयन्ते। तेषाम् एव एष ब्रह्मलोकः, येषां तपः ब्रह्मचर्यं, येषु सत्यं प्रतिष्ठितम् ॥१५**

ऋषि जिज्ञासु को बतलाते हैं उनका निवास निर्मल ब्रह्मलोक में होता है । उनके लोक में कुटिलता नहीं होती, असत्य नहीं होता, न छल कपट-प्रवंच या किसी प्रकार का धोखा होता है । श्रुति कहती है–

**तेषाम् असौ विरजः ब्रह्मलोकः ।**
**न येषु जिह्मम् अनृतम् न माया च इति ॥१६**

## सृष्टि कौन धारण करता है, यह बिखरती क्यों नहीं ?

कबन्धी जिज्ञासु की इस जिज्ञासा–कि यह सृष्टि कैसे उत्पन्न होती है? के उत्तर में ऋषि पिप्पलाद ने बतलाया– सृष्टि का घटक तत्त्व प्रजापति है, वह प्राण और रयि के जोड़े से जीवन का चक्र चलाता है। उन दोनों में प्राणशक्ति प्रमुख है । वहां तप, ब्रह्मचर्य, सत्य के आचरण से निर्मल ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है । दूसरे जिज्ञासु थे भृगुगोत्री वैदर्भि, ने जिज्ञासा की– सृष्टि की रचना हो जाने पर कौन इसे धारण करता है, किसके सहारे यह सृष्टि टिकी रहती है? कृपया बतलाइए– इस उत्पन्न हुई सृष्टि को कितने देव धारण करते हैं, कौन इसका ज्ञान कराते हैं और इन देवताओं में कौन सब से प्रमुख और श्रेष्ठ है ?

## प्राण ही ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड को धारण किए हुए हैं ?

जड़ जगत् के पांचों महाभूत तथा चेतन जगत् की पांचों इन्द्रियां जब अपनी महत्ता बघारने लगीं, तब उनमें वरिष्ठ प्राण ने उनसे कहा–तुम मूर्खतापूर्ण अभिमान मत करो, मैं ही अपने को पांच प्राणों में बांट कर स्थूल–जड़–चेतन सृष्टि को धारण कर रहा हूं । जब पांचों महाभूत और पांचों इन्द्रियाँ यह बात मानने में इन्कार करने लगीं तब प्राण ने उत्क्रमण–बाहर निकलने का प्रारम्भ किया ही था कि पांचों इन्द्रियां अपनी जड़ों से हिल गईं और वे भी उसी के साथ निकलने को प्रस्तुत हुईं, जब प्राण फिर से जम गया तब दूसरी इन्द्रियां भी फिर से जम गईं । यह ठीक उसी प्रकार हुआ, जैसे रानी मक्खी के उड़ जाने पर दूसरी मधु मक्खियां भी उड़ जाती हैं और उसके बैठ जाने पर सब फिर बैठ जाती हैं । सब



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन्द्रियां समझ गईं कि उनका अस्तित्व प्राण पर निर्भर है । यह सब देख कर जड़ जगत् के पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश एवं चेतन जगत् की आंख, नाक, कान, वाणी तथा त्वचा प्राण की स्तुति करते हुए कहने लगे–''यह जो अग्नि तपती है, वह सृष्टि की प्राणशक्ति के कारण, यह सूर्य जो प्रकाश दे रहा है, यह पर्जन्य जो बरस रहा है, यह मघवा-इन्द्र जो दान दे रहा है– पृथिवी, रयि, देव, सत्, असत्, अमृत-इन सब का मूल आधार प्राण ही है।''

ऋषि पिप्पलाद सात ऋचाओं में प्राण की स्तुति करते हैं । वह कहते हैं–''रथ के पहिए की नाभि (हाल) में जैसे अरे जुड़े रहते हैं, वैसे ही प्राणरूपी पहिए में संसार का सब कुछ जुड़ा हुआ है । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद आदि का सम्पूर्ण ज्ञानकाण्ड तथा यज्ञ-यागादि यह सम्पूर्ण कर्म-काण्ड, क्षत्र अर्थात् भौतिक शक्ति और ब्रह्म रूपी आत्मिक शक्ति-ये सब भी प्राण में प्रतिष्ठित हैं । ऋचा इस प्रकार है–

**अरा इव रथनाभौ प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम् ।**
**ऋचः यजूंषि सामानि यज्ञं क्षत्रं ब्रह्म च ॥६॥**

ऋषि स्तुति करते हुए कहते हैं– ''हे प्राण, तू ही प्रजापति के रूप में गर्भ में विचरण कर रहा है । हे प्राण, सम्पूर्ण प्रजाएं तेरे लिए ही उपहार देती हैं । हे प्राण, तू प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान-इन प्राण शक्तियों से प्रतिष्ठित हो रहा है ।'' मन्त्र इस प्रकार है–

**प्रजापतिः चरसि गर्भे त्वम् एव प्रतिजायसे । तुभ्यं प्राणः प्रजाः तु इमाः बलिं हरन्ति यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि ॥१७॥**

हे प्राण, गुण की दृष्टि से बड़ों देवों में तू वह्नितम है, आयु में बड़ों-पितरों में तू प्रथम स्वधा है, ऋषियों में तू चरित है, अथर्वा– अथर्व वादियों में तू सत्य है । आगे ऋषि कहते हैं–हे प्राण, तुम अपने तेज से इन्द्र हो, अपने भीषण रूप से प्राणियों की रक्षा करने के कारण रुद्र हो, तुम अन्तरिक्ष में विचरण करने वाले सूर्य हो, आप सूर्य की तरह ज्योतियों के पति हैं । सम्बद्ध मन्त्र इस प्रकार है–

**इन्द्रः त्वं प्राणः, तेजसा रुद्रः असि परिरक्षिता ।**
**त्वम् अन्तरिक्षे चरसि सूर्यः त्वं ज्योतिषां पतिः ॥१८॥**

पिप्पलाद ऋषि कहते हैं–हे प्राण, जब तुम बादल के रूप में बरसते हो, तब तुम्हारे द्वारा पैदा की हुई इस सृष्टि की प्रजा आनन्द विभोर होकर कहती है– अब यथेच्छ अन्न पैदा होगा । ऋषि आगे कहते हैं– हे प्राण, तू व्रात्य है और ऋषियों में मूर्धन्य भी है, तू विश्व को खा जाने वाला है और तुम ही इसके पालन करने वाले हो, तुम भोक्ता हो और हम भोग्य देने वाले हैं–तुम प्राण रूप दिखने वाली मातरिश्वा वायु के भी पिता हो।''

ऋषि स्तुति करते हुए कहते हैं– ''हे प्राण तुम्हारा जो रूप वाणी


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में प्रतिष्ठित है या जो तुम्हारा स्वरूप कान और आंख में प्रतिष्ठित है अथवा जो तुम्हारा स्वरूप मन में फैल रहा है, उन सब को कल्याणकारी करें, आप उनसे उत्क्रमण न करें, आप से अनुरोध है कि हम में भरपूर प्राणशक्ति का संचार करें, जिससे मेरे अंग-अंग में प्राणशक्ति का संचार हो । सम्बद्ध ऋचा इस प्रकार है–

**या ते तनूः वाचि प्रतिष्ठिता, या श्रोत्रे, या च चक्षुषी । या च मनसि संतता, शिवां तां कुरु, मा उत्क्रमीः ॥१९॥**

ऋषि सातवीं ऋचा में स्तुति करते हुए सांसारिक श्री और आध्यात्मिक प्रज्ञा दोनों की याचना करते हुए कहते हैं– ''यह सब प्राण के ही वश में है, जो कुछ भी इस पृथिवी, द्यु तथा आकाश के 'त्रिदिव' में है– वह सब आप के नियन्त्रण में है, इसलिए हे प्राण, आप हमारी ऐसी रक्षा करें, जैसे माता पुत्रों की रक्षा करती है, आप हमारे लिए भौतिक ऐश्वर्य तथा मानसिक एवम् आध्यात्मिक ऐश्वर्य का विधान करें ।

प्राण की स्तुति कर सांसारिक सम्पत्ति तथा सांसारिक एवम् आध्यात्मिक बुद्धि एवं प्रज्ञा की याचना कर ऋषि ने भृगुगोत्री वैदर्भि की जिज्ञासा का समाधान कर दिया । जिज्ञासु ने पूछा था ''सृष्टि की रचना हो जाने पर वह किसके सहारे टिकी रहती है?'' ऋषि पिप्पलाद ने बतलाया– ''यह सारी सृष्टि प्राण के सहारे टिकी हुई है, पिण्ड में प्राण और ब्रह्माण्ड में उसका जीवन देने वाला प्रजापति न हो तो यह टिक नहीं सकती ।

## प्राण कहां से आता है और कहां रहता है?

दूसरे प्रश्न का उत्तर दिए जाने पर तीसरे जिज्ञासु कौशल्य आश्वलायन ऋषि पिप्पलाद के सम्मुख आए और जिज्ञासा की ''भगवन्, यह प्राण कहां से या किससे उत्पन्न होता है? यह इस शरीर में कैसे आता है, शरीर में प्रविष्ट होकर यह अपने आप को बांट कर इस देह में कैसे रहता है? शरीर में निवास करने के बाद यह प्राण इस शरीर को कैसे छोड़ता है, किस प्रकार यह बाह्य जगत् के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है और किस प्रकार आभ्यन्तर आत्मिक जगत् के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है । मूल ऋचा इस प्रकार है–

**अथ ह एनं कौशल्यः आश्वलायनः प्रपच्छ–भगवन् कुतः एष प्राणः जायते । कथम् आयाति अस्मिन् शरीरे, आत्मानं वा प्रविभज्य कथं प्रातिष्ठते । केन उत्क्रमते, कथं बाह्यम् अभिधत्ते, कथम् अध्यात्मम् इति ॥१॥**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस पर ऋषि पिप्पलाद ने कहा– बहुत ज्यादा प्रश्न पूछ रहे हो, पर क्योंकि तुम ब्रह्मिष्ठ हो– ब्रह्म-भगवान् में आस्था रखते हो, इसलिए तुम्हें उत्तर देता हूं– आपने जिज्ञासा की है कि यह प्राण कहां से पैदा होता है?, उत्तर है आत्मा से प्राण पैदा होता है, जैसे पुरुष के साथ उसकी छाया लगी रहती है । वैसे, आत्मा के साथ प्राण समाविष्ट रहता है । तुम्हारी अगली जिज्ञासा थी कि इस शरीर में प्राण कैसे आता है? ऋषि पिप्पलाद ने उत्तर दिया– मन में किए संकल्प के कारण प्राण आत्मा के साथ संलग्न हुआ इस शरीर में प्रविष्ट हुआ करता है । अन्तिम जिज्ञासा थी–**आत्मानं प्रविभज्य कथं प्रातिष्ठते?** इस जिज्ञासा के उत्तर में पिप्पलाद का समाधान था जैसे सम्राट् अपने अधीन कर्मचारियों को अपने-अपने काम में नियुक्त करता है और उन्हें निर्देश देता है कि इन-इन ग्रामों के अधिष्ठाता बन कर उन्हें सम्भालो, उसी तरह प्राण अन्य प्राणों को पृथक्-पृथक् कार्यों में नियुक्त कर देता है । सम्बद्ध ऋचाएं निम्न हैं–

**आत्मनः एष प्राणः जायते । यथा एषा पुरुषे छाया एतस्मिन् एतद् आततम्। मनोधिकृतेन आयाति अस्मिन् शरीरे ॥३॥**

**यथा सम्राट् अधिकृतान् विनियुङ्क्ते, एतान् ग्रामान् अधितिष्ठस्व इति । एवम् एव एषः प्राणः इतरान् प्राणान् पृथक्-पृथक् एव संनिधत्ते ॥४॥**

ऋषि स्पष्ट करते हैं–प्राण इन प्राणों को क्या-क्या काम सौंपते हैं– गुदा तथा उपस्थ में अपान को, आंख, कान, मुख, नाक में स्वयं 'प्राण' प्रतिष्ठित होता है, शरीर के मध्य भाग में 'समान' । यह समान-वायु शरीर में आहुति के रूप में पड़े हुए अन्न को सम-एक रस बना कर सब जगह पहुंचा देता है । जब शरीर में सब जगह अन्न का रस पहुंच जाता है– तब उससे शरीर में सात ज्योतियां जाग उठती हैं ये सात ज्योतियां हैं– दो आंखें, दो कान, दो नाक तथा एक मुख । इन सब में जो ज्योति है, वह समान द्वारा अन्न को रस में रूपान्तरित कर देने से उन्हें मिलती है । सम्बन्धित ऋचा इस प्रकार है–

**पायु उपस्थे अपानम् चक्षुः श्रोत्रे मुखनासिकाभ्यां प्राणः स्वयं प्रतिष्ठते । मध्ये तु समानः एष हि हुतम् अन्नम् नयति । तस्माद् एताः सप्त अर्चिष भवन्ति ॥५॥**

व्यान के विषय में ऋषि बतलाते हैं– "आत्मा हृदय में रहता है। हृदय में १०१ नाड़ियां हैं, उनमें से एक-एक से सौ-सौ शाखाएं फूटती हैं, उन शाखा सहस्रों में से एक-एक शाखा से बहत्तर शाखाएं फूटती हैं, वर्त्तमान शरीर विज्ञान में उन्हें कोशिकाएं की संज्ञा दी गई है। उनमें व्यान वायु प्रवाहित होता है ।" मूल ऋचा देखिए–



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

**हृदि हि एषः आत्मा । अत्र एतत् एकशतं नाडीनाम्। तासां शतं-शतम् एकैकस्याम् द्वा सप्ततिः द्वा सप्ततिः प्रतिशाखा नाडीसहस्त्राणि भवन्ति । आसु व्यानः चरति ॥६॥**

ऋषि व्यान का वर्णन करने के बाद हृदय से ऊपर जाने वाली नाड़ी को उदान कहते हैं । आधुनिक शरीर-विज्ञान में ऊपर जाने वाली प्रणालिका आयोर्टा कहलाती है । पुण्य कर्म के फलस्वरूप उदान आत्मा को पुण्य-लोक में ले जाता है, पाप करने से वह पाप-लोक में जाता है, दोनों प्रकार के कर्म करने वाला मनुष्य लोक में जाता है । सम्बद्ध ऋचा इस प्रकार है–

**अथ एकया ऊर्ध्वः उदानः पुण्येन पुण्यं लोकं नयति ।**
**पापेन पापम् उभाभ्याम् एव मनुष्यलोकम् ॥७॥**

पिप्पलाद ऋषि आत्मा तथा प्राण में भी भेद करते हैं । पीछे ऋषि बतला आए हैं जैसे पुरुष के साथ छाया रहती है, वैसे ही आत्मा के साथ प्राण रहता है । **यथा एषा पुरुषे छाया एतत् अस्मिन् एतद् आततम् ।** जड़ तथा आत्मा के बीच की कड़ी प्राण है । यह ठीक है कि जिस प्रकार आंख, नाक, कान आदि दीखते हैं, उस प्रकार प्राण नहीं दीखता, तथापि जिस प्रकार आंख, नाक कान आदि की पृथक् अनुभूति होती है, उसी प्रकार प्राण की अनुभूति होती है परन्तु आत्मा की पृथक् अनुभूति नहीं होती । आत्मा को कोई माने या न माने परन्तु प्राण को मानने से कोई इन्कार नहीं करता । शरीर तथा आत्मा को जोड़ने की कड़ी प्राण है परन्तु यह न शरीर है और न आत्मा । ऋषि बतलाते हैं कि हृदय की १०१ नाड़ियों में से एक सीधी मस्तक मूर्धा को चली गई है । इसी सुषुम्णा नाड़ी में उदान वायु विचरता है । यह नाड़ी सिर से पैर के तलवे तक फैली हुई है । इसी हृदयस्थ नाड़ी के एक अंग में जीवात्मा का निवास कहा जाता है, मन को इस नाड़ी से संयुक्त कर समाधि में लीन योगी आत्मज्ञान की उपलब्धि करते हैं । उदान प्राण ही लिंग शरीर के सहित जीवात्मा को शरीर से निकालता है तथा कर्मों के अनुसार योनि और भोग प्राप्त कराता है ।

## जो पिण्ड में और वह ब्रह्माण्ड में है ।

उपनिषत्-कालीन चिन्तकों-ऋषियों की धारणा थी कि यह मानव शरीर रूपी पिण्ड ब्रह्माण्ड की ही छोटी आकृति है और यह ब्रह्माण्ड -विशाल सृष्टि पिण्ड की बड़ी आकृति है । जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है **'यत्पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, यत् ब्रह्माण्डे तत् पिण्डे ।'** धारणा को



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्मुख रख कर ऋषि पिप्पलाद कहते हैं– १. जैसे पिण्ड में आंख, नाक आदि इन्द्रियों को प्राण जीवन देता है, वैसे ब्रह्माण्ड के बाह्य जगत् में सूर्य का काम प्राणशक्ति को सर्वत्र पहुँचाना होता है, आदित्य सूर्य बाहरी प्राण है, उदय होता हुआ सूर्य प्राणशक्ति से अनुगृहीत करता है । २. जैसे पिण्ड में प्राण की अपान-शक्ति मूत्र-पुरीष को नीचे की तरफ धकेलती है, उसी प्रकार पृथिवी की गुरुत्व शक्ति अपान-शक्ति के तुल्य है । यही शक्ति पृथिवी को थामे हुए है । ३. ब्रह्माण्ड में आकाश-सूर्य तथा पृथिवी का मध्यवर्त्ती अन्तराल जिसे सामान्य परिभाषा में आकाश कहते हैं वह ब्रह्माण्ड का 'समान' है। पुरुष का प्राण उसके ऊपरी शारीरिक अंगों में है, अपान नीचे के अंगों में बीच का पेट का खाली भाग ही आकाश है । ४. पिण्ड में व्यान कोशिकाओं द्वारा रुधिर और अन्य रस शरीर के प्रत्येक अंग में पहुंचाता है, इसी तरह ब्रह्माण्ड में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने वाली वायु, बादलों एवं वर्षा-कणों को पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पहुंचा देती है । ५. ऋषि पिप्पलाद तेज को उदान कहते हैं, पिण्ड में ऊपर जाने की शक्ति ही उदान है, वही जीवन में तेज और ब्रह्माण्ड में तेज का प्रतिनिधित्व करता है । सम्बन्धित ऋचाएं ये हैं–

**आदित्यः ह वै बाह्यः प्राणः, उदयति एष हि एनं चाक्षुषं प्राणं अनुगृह्णानः । पृथिव्यां या देवता सा एषा पुरुषस्य अपानम् अवष्टभ्य अन्तरा यत् आकाशः सः समानः वायुः व्यानः ॥८॥**

**तेजः ह वै उदानः । तस्मात् उपशान्ततेजाः पुनर्भवम् इन्द्रियैः मनसि संपद्यमानैः॥९॥**

ऋषि पिप्पलाद स्पष्ट करते हैं- मन में जिस प्रकार के संस्कार एकत्र हो जाते हैं, उन संस्कारों को ग्रहण कर चित्त प्राण के पास अर्थात् उदान रूपी प्राण के पास पहुंचता है (**यत् चित्तः तेन एष प्राणम् आयाति**) यह उदान-प्राण तेज तथा आत्मा को लेकर इसका जैसा जैसा संकल्प होता है यह प्राण आत्मा को वैसे-वैसे लोक में ले जाता है । (**प्राणः तेजसा युक्तः सह आत्मना यथा संकल्पितं लोकं नयति ।**)

ऋषि पिप्पलाद बतलाते हैं– जो विद्वान् ऊपर बतलाए प्राण के रहस्य को जान लेता है, उसकी वंश परम्परा बनी रहती है, वह अमर हो जाता है ।

आश्वलायन ने एक साथ कई प्रश्न कर दिए थे । उसकी जिज्ञासा थी कि प्राण की उत्पत्ति कहां से होती है? ऋषि पिप्पलाद ने उत्तर दिया था– "आत्मा से प्राण की उत्पत्ति होती है । आश्वलायन की जिज्ञासा थी कि प्राण शरीर में कैसे आता है? ऋषि ने उत्तर दिया था "आत्मा के साथ लगा प्राण शरीर में प्रविष्ट हुआ करता है । आश्वलायन की जिज्ञासा थी–शरीर के किस-किस भाग में प्राण प्रतिष्ठित है । बाह्य शरीर के साथ अध्यात्म में प्राण



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कैसे रहता है, इन सब का ऋषि स्पष्टीकरण कर चुके हैं। अन्त में वह कहते हैं कि जो व्यक्ति प्राण की उत्पत्ति, आयति, स्थान, विभुत्व और अध्यात्म को इन के रहस्य को जान कर जीवन व्यतीत करता है, वह अमृत का आस्वादन करता है। सम्बद्ध ऋचा इस प्रकार है–

**उत्पत्तिम्, आयतिं, स्थानं, विभुत्वं च एव पञ्चधा, अध्यात्मञ्चैव प्राणस्य विज्ञायामृतमश्नुते, विज्ञाय अमृतमश्नुते इति ॥१२॥**

इस उपनिषत् के उक्त तीन प्रश्नों के उत्तर में ऋषि पिप्पलाद ने प्राण की महिमा बतलाई है, जिज्ञासु साधक उन्हें भली प्रकार जानकर उनके अनुकूल आचरण कर संसार-सागर के चक्र से मुक्त हो सकता है।

## इन्द्रियां भोग्य हैं–आत्मा ही द्रष्टा और भोक्ता है

इसके बाद चौथे जिज्ञासु सूर्य के पोते सौर्यायिणी ने पहले प्रश्नों में की गई शारीरिक स्तर की चर्चा से ऊपर उठ कर मानसिक स्तर की चर्चा करते हुए जिज्ञासा की–''भगवन्, इस पुरुष के भीतर कौन शक्तियां हैं, जो सो जाती हैं। (**एतस्मिन् पुरुषे कानि स्वपन्ति**) और कौन शक्तियां हैं जो सोने के बाद जाग उठती हैं। (**कानि अस्मिन् जाग्रति**) और बहुत से प्राणादि के बीच इस पुरुष शरीर के भीतर बैठा हुआ वह कौन देव है, ज्ञानरूप प्रकाश से युक्त स्वप्नों को देखता है (**कतरः एषः देवः स्वप्नान् पश्यति**) किसे यह सुख की अनुभूति होती है अर्थात् पुरुष में जो स्वप्न, जागरण और सुख होता है (**कस्य एतत् सुखं भवति**) वास्तव में होने वाली भिन्न अनुभूतियां वस्तुतः एक ही तत्त्व के नाना रूप हैं (**कस्मिन् सर्वे संप्रतिष्ठिताः भवन्ति।**)

ऋषि पिप्पलाद ने जिज्ञासु सौर्यायणी को उत्तर दिया–'' हे गार्ग्य' जैसे अस्त के समय सूर्य की किरणें सब की सब उसके ज्योतिर्मय मण्डल में इकट्ठी हो जाती हैं और फिर जब सूर्य उदय होता है तब वे फिर-फिर फैल जाती हैं, इसी प्रकार शयन-सोने रूपी अस्त की ओर प्रवृत्त होती हुई प्राणी की इन्द्रिय रूपी किरणें मन रूपी सूर्य में एकाकार हो जाती हैं। शयन की उस स्थिति में पुरुष न सुनता है, न देखता है, न सूंघता है, न रस लेता है, न स्पर्श करता है, न बोलता है। (**न शृणोति, न पश्यति, न जिघ्रति, न रसयते, न स्पृशते, न अभिवदते।**) वह न कुछ पकड़ता है, न आनन्द करता है, मल-मूत्र का विसर्जन नहीं करता, न गति करता है। (**न आदत्ते, न आनन्दयते, न विसर्जते, न इयायते।**) ऐसी स्थिति में यही कहा जाता है कि वह सो रहा है–वैसे, वह नहीं सोता, इसकी इन्द्रियां ही सोती हैं। (**स्वपिति इति आचक्षते।**)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर जब इन्द्रियां सो जाती हैं, जब न आंखें देखती हैं, कान सुनते नहीं हैं, उस समय पिप्पलाद ऋषि का कथन है– ''प्राण जागते रहते हैं।'' ऋषि यहां प्राणियों को प्राणाग्नि कहते हैं। प्राण, अपान, समान व्यान, उदान ये सब अग्नि के तुल्य हैं, वे सदा प्रज्वलित रहते हैं, ये कभी बुझते नहीं, सदा जागते रहते हैं । ये सब मानव शरीर रूपी नगरी में पहरा देते रहते हैं । प्राचीन समय में प्रत्येक गृहस्थ कभी न बुझने वाली गृहपति की अग्नि 'गार्हपत्य अग्नि' सुरक्षित रखता था । ऋषि पिप्पलाद उस गार्हपत्य अग्नि को अपान कहते हैं, यह शरीर में रहने वाला नाभिस्थ अपान है । इसी गार्हपत्य अग्नि से अग्निहोत्र के लिए अग्नि ले जाई जाती थी, पिप्पलाद के मत में वही प्राण की प्रतिनिधि है । (**यद् गार्हपत्यात् प्रणीयते प्रणयनात् आहवनीयः प्राणः।**) इस प्रकार अपान, व्यान तथा प्राण गृहपति की पंचाग्नियों की तरह सदा जागते रहते हैं ।

समान और उदान की चर्चा करते हुए ऋषि उद्दालक स्पष्ट करते हैं–''प्राण तथा अपान का उच्छ्वास भीतर आना तथा निःश्वास बाहर जाना– ये दोनों (**यत् उच्छ्वासः यत् निःश्वासः एतौ**) यज्ञ में दी जाने वाली आहुतियों के समान हैं । (**आहुतिसमम्**) यज्ञ में दी जाने वाली आहुतियां सूक्ष्म धुएं में आहुतियों के तत्त्व सब जगह समान रूप में पहुँचा देती हैं। इसलिए यज्ञ की आहुतियों का कार्य समान का प्रतिनिधि है । (**नयति इति सः समानः**) इस पंचाग्नि यज्ञ में मन यजमान का काम करता है । (**मन ह वाव यजमानः**) जैसे यज्ञ में एक न एक अभिलाषा होती है, इसी प्रकार पंचाग्नि यज्ञ में इष्टफल होता है, इसी प्रकार पंचाग्नि यज्ञ का इष्टफल उदान है । उदान का कार्य ऊपर ले जाना है । उदान रूप प्राणाग्नि ऊपर उठा कर ब्रह्म-ज्ञान के मार्ग पर डाल देती है । (**स एव यजमानम् अहरहः ब्रह्म गमयति ।**)

पिप्पलाद मुनि ने सौर्यायणी को पांच प्राणों की तुलना करते हुए बतलाया जैसे पांच अग्नियां बुझती नहीं, वैसे पांचों प्राण थकते नहीं बुझते नहीं, दिन-रात जागते रहते हैं ।

## स्वप्न कौन देखता है?

जिज्ञासु सौर्यायिणी की जिज्ञासा थी कि स्वप्न कौन देखता है (**कतरः स्वप्नान् पश्यति**) जब इन्द्रियां सो जाती हैं, प्राण जागते रहते हैं परन्तु प्राण स्वप्न नहीं देखते, इन्द्रियों और प्राण के अतिरिक्त मन तीसरा तत्त्व है, जो आंखें बन्द करके देखता है, कान बन्द करके सुनता है । बिना साधनों के वह सब कुछ करता है । मन देखे-अनदेखे को, सुने-अनसुने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को, अनुभव किए या अनुभव न किए, सत्-असत् को सब कुछ को देखता है । (**सर्वं पश्यति**) सब प्राणी भी ऐसे ही देखते हैं।

सौर्यायणी की चौथी जिज्ञासा थी–'सुख किसे होता है?' ऋषि पिप्पलाद जिज्ञासा का समाधान करते हुए बतलाते हैं– 'जब आत्मा तेज गुण से अभिभूत होता है, तब उस अवस्था में आत्मदेव सपने नहीं देखता। स्वप्नावस्था में सपने आते हैं । सुषुप्ति अवस्था में स्वप्न नहीं आते । स्वप्नावस्था तथा सुषुप्ति में भेद यह है, स्वप्न की स्थिति रजोगुण प्रधान है, जबकि सुषुप्ति सतोगुण प्रधान है । सत्त्व गुण की अवस्था ही तेज: स्वरूप स्थिति है आत्मा का यह तेजोमय रूप है । सुषुप्ति का उल्लेख उपनिषदों में मिलता है, उसी के आधार पर उसमें अध्यात्म की चर्चा की गई । सम्भवत: स्वप्नहीन निद्रा या नींद ही सुषुप्ति है। सुषुप्ति में इन्द्रियां, प्राण, मन सब अलग हो जाते हैं–आत्मा अपने पथ में आ जाता है ।

सौर्यायणी की पांचवीं जिज्ञासा थी–इन्द्रियां, प्राण मन आदि क्या स्वतन्त्र रूप से अपनी-अपनी इच्छा से काम करते हैं अथवा किसी नियामक केन्द्र के नियन्त्रण में बंधे होते हैं?

इस जिज्ञासा के उत्तर में ऋषि पिप्पलाद ने बतलाया– हे प्रिय, वृक्ष पर बसेरा कर जैसे पक्षी वहां प्रतिष्ठित हो जाते हैं, वहां बस जाते हैं, वही उनका आश्रय-स्थल बन जाता है । उसी तरह ये सब इन्द्रियाँ प्राण, मन, आत्मा में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, वही उनका आश्रय-स्थल बन जाता है ।

सौर्यायणी ने पूछा था–आत्मा की शरण में कौन कौन आते हैं? पिप्पलाद बतलाते हैं–स्थूल तथा सूक्ष्म पृथिवी, स्थूल तथा सूक्ष्म जल, स्थूल तथा सूक्ष्म वायु, इस प्रकार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड या भौतिक जगत्, आंख, कान, नाक, रस, त्वचा, वाणी, हाथ, उपस्थ, पायु, मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त और इन सब इन्द्रियों के विषय अर्थात् सम्पूर्ण आध्यात्मिक जगत् या पिण्ड ये सब आत्मा की शरण में रहते हैं या उसमें प्रतिष्ठित हैं । भौतिक तथा आध्यात्मिक जगत्, ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड का आश्रय-स्थल आत्मा ही है । यहां एक विस्तृत सूची दी गई है । जिसमें ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड का आश्रय-स्थान आत्मा ही है । पृथिवीमात्रा और आपोमात्रा का अर्थ इन तत्त्वों का सूक्ष्म रूप है, सब कुछ अपने आधार पर नहीं, परन्तु आत्मा के आधार पर टिका हुआ है ।

## वही द्रष्टा, इन्द्रियां भोग्य हैं

ऋषि पिप्पलाद बतलाते हैं–"देखने वाला तो वह आत्मा है,



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्पर्श करने वाला, सुनने वाला, सूंघने वाला, रस लेने वाला तो वह आत्मा है, मनन करने वाला, बुद्धि का प्रयोग करने वाला, सब कुछ करने वाला तो यह आत्मा है । वह आत्मा विज्ञानमय पुरुष है । जैसे इन्द्रियां, प्राण, मन आत्मा में प्रतिष्ठित हैं, आत्मा के अवलम्ब से टिके हुए हैं, उसी प्रकार यह विज्ञानमय पुरुष आत्मा-अविनाशी आत्मा-विज्ञानमय पुरुष परमात्मा के सहारे टिका हुआ है। सम्बन्धित ऋचा इस प्रकार है–

**एष हि द्रष्टा, स्प्रष्टा, श्रोता, घ्राता, रसयिता, मन्ता, बोद्धा, कर्त्ता, विज्ञानात्मा पुरुषः । स परे अक्षरे आत्मनि संप्रतिष्ठते ॥९॥**

इस प्रकार जब आत्मा इन्द्रियों से अपना सम्बन्ध तोड़ लेता है, तब वह अपने अक्षर स्वरूप में आ जाता है, अपने आप में आ जाता है ( **आत्मनि संप्रतिष्ठते** ) अपने वास्तविक रूप आत्मा को असली स्वरूप उसके शुद्ध रूप को जो कुछ जानने योग्य है, उस सब को जान लेता है । इसी भाव की अभिव्यक्ति करते हुए ऋषि पिप्पलाद कहते हैं–

**परमेवाक्षरं प्रतिपद्यते स यो ह वै तदच्छाययममशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरं वेदयते यस्तु सौम्य । स सर्वज्ञः सर्वो भवति तदेव श्लोकः॥१०॥**

वह व्यक्ति परम अविनाशी परम अक्षर आत्मा (या ब्रह्म) को प्राप्त कर लेता है, वह छाया रहित, शरीर रहित, रुधिर रहित, शुभ्र अक्षर रहित आत्मा या ब्रह्म को जान लेता है । हे सोम्य, वह सर्वज्ञ हो जाता है, जो कुछ जानने योग्य है, वह उसे जान लेता है, और इस जीवन में जो कुछ बनने योग्य था, वह बन जाता है । ऋषि अगली ऋचा में कहते हैं–"वर्णन किया जा रहा यह आत्मा विज्ञानस्वरूप है, वह सब इन्द्रियों को लेकर जो कुछ बच रहा है, उसे भी लेकर प्राण, पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश आदि पांचों महाभूत उसी में प्रतिष्ठित होते हैं । जो इस अक्षर आत्म या परमात्म तत्त्व को जानता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है और हर पदार्थ में प्रविष्ट हो जाता है–अर्थात् प्रत्येक पदार्थ की प्रत्येक सूक्ष्मता को जान लेता है । सम्बद्ध ऋचा इस प्रकार है–

**विज्ञानात्मा सह देवैश्च सर्वैः प्राणाः भूतानि संप्रतिष्ठन्ति यत्र तदक्षरं वेदयते। यस्तु सौम्य, सर्वज्ञः सर्वमाविवेशेति ॥११॥**

परमात्मा ने सब इन्द्रियों को बाहर देखने वाला बनाया है । बाहर के पट बन्द कर, जो आन्तरिक पट खोलता है । सब शास्त्रों के तत्त्व को जानने वाला वह आत्मा को आमने-सामने देख लेता है । वह चराचर जगत् के नियन्ता ब्रह्म को जान कर सब भौतिक दुःखों से छूट जाता है।

## ओङ्कार के ध्यान-उपासना का लाभ

चौथे प्रश्न के माध्यम से हम आत्म-ज्ञान की महत्ता समझ चुके



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं । आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए ध्यान-उपासना के मार्ग उपयोगी कहे जाते हैं । पांचवें जिज्ञासु शिवि के पुत्र सत्यकाम ने ध्यान के विषय में जिज्ञासा की–"भगवन्, मनुष्यों में जो प्रसिद्ध तपस्वी योग-नियमादि योग के अंगों के अनुष्ठान में तत्पर ज्ञानी विद्वान् गृहाश्रमादि में होने वाले संसारी सुख को छोड़कर ब्रह्मचर्य धारण कर योगाभ्यास और तप करता हुआ जीवन पर्यन्त ( **प्रायणान्तम्** ) ओङ्कार शब्द के वाच्यार्थ ब्रह्म की उपासना करता है, वह कैसे फल व अधिकार को पाता है । मन्त्र देखिए –

**अथ हैनं शैव्यः सत्यकामः पप्रच्छ । स यो ह वै तद्भगवन्मनुष्येषु प्रायणान्तमोङ्कारमभिध्यायीत । कतमं वाव स लोकं जयतीति ॥१॥**

ऋषि ने उत्तर दिया–परमार्थ मुक्तिफल की प्राप्ति की कामना से जिसकी उपासना की गई हो, अथवा संसारी सुख की कामना से जिसकी उपासना की गई हो, वही ओङ्कार निश्चय से 'पर' तथा 'अपर' ब्रह्म है । यह जो ओङ्कार शब्द अर्थ और दोनों का ज्ञान एक दूसरे में लय करने से 'ओ३म्' यह ज्ञान है, इसलिए ज्ञानी पुरुष आत्मज्ञान की प्राप्ति के साधन के रूप में पर तथा अपर एक उपासना में से पर या अपर फल को अनुकूलता से प्राप्त कर लेता है । ऋचा इस प्रकार है–

**तस्मै स ह उवाच । एतत् वै सत्यकाम, परं च अपरं च ब्रह्म यत् ओङ्कारः । तस्मात् विद्वान् एतेन एव आयतनेन एकतरमन्वेति ॥२॥**

ब्रह्म के पर रूप का अर्थ है –इस सृष्टि से परे ब्रह्म का वह रूप जो निर्लेप रूप है, सृष्टि से पृथक् रूप । अपर रूप है वह जो सृष्टि में दिखलाई देता है, सृष्टि के कर्त्ता का रूप । योगी लोग ब्रह्म के, स्थूल सूक्ष्म लिंग शरीर रहित, क्षतादि रहित, शुद्ध, पाप शून्य, कवि, मनीषी ( **अकायम् अस्नाविरं शुद्धम् अपापविद्धं कविः मनीषीः** ) स्वरूप की उपासना करते हैं । संसारी पुरुष सृष्टि के रचनाकार, सुख-दुःख की व्यवस्था करने वाले परमात्मा की आराधना करते हैं । ज्ञान-काण्ड के ग्रन्थ उपनिषदों में पर-ब्रह्म की उपासना है तो कर्मकाण्ड-यज्ञ यागादि के ब्राह्मण ग्रन्थों में अपर ब्रह्म की आराधना । ये दोनों ही प्रणालियां ब्रह्म-ओङ्कार पर आधारित हैं, योगी पर रूप ओङ्कार का ध्यान कर अध्यात्म मार्ग का पथिक बनता है, संसारी ओङ्कार की आराधना से संसार के सुख पाता है । ऋषि पिप्पलाद ओङ्कार की एक मात्रा, दो मात्राओं और तीन मात्राओं के ध्यान-उपासना का फल बतलाते हैं । पहले एक-मात्र ओंकार का ध्यान करे तो उससे ही ज्ञान युक्त होकर पृथिवी में सम्पन्न-समृद्ध हो जाता है । ऋचाएं उसे मृत्युलोक में ले जाती हैं । मनुस्मृति में लिखा है–अ उ म् इन तीन वर्णों का ऋगादि तीन वेदों के



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधार पर परमेश्वर ने ओ३म् नाम रखा है, इसलिए यह मुख्य नाम है। कर्म, उपासना, ज्ञान-ये वेदों के तीन मुख्य विषय हैं और भूः भुवः स्वः ये तीन मुख्य लोक हैं । लौकिक फल की प्राप्ति की इच्छा से यदि कोई व्यक्ति ब्रह्म की उपासना करे तो उसे परमेश्वर का पूरा बोध नहीं होता । मनुष्य लोक में जन्म लेकर वह तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा से सम्पन्न होकर महिमा की अनुभूति करता है । (**स तत्र तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया सम्पन्नो महिमानमनुभवति।**)

ऋषि पिप्पलाद बतलाते हैं– साधक यदि द्विमात्र (अ, उ) ओङ्कार का मन में ध्यान करे तो मानस कर्म की प्रधानता वाले चन्द्रादि लोकों में मानस सुख की अनुभूति करता है । (**स अन्तरिक्षं यजुर्भिः उन्नीयते सोमलोकम्**) सोमलोक की विभूतियों की अनुभूति के बाद फिर इस लोक में वापस आता है (**स सोमलोके विभूतिमनुभूय पुनरावर्त्तते।**)

ऋषि आगे बतलाते हैं जो साधक सब कालों में मन वाणी-कर्म से 'अ उ म्' त्रिमात्र ओम् से परम पुरुष ब्रह्म की उपासना करता है, तब वह जैसे सांप, केंचुली छोड़ देता है । उसी प्रकार वह सूर्य लोक में पहुंचता है। ऐसा जीवन-मुक्त व्यक्ति सूर्य की ज्योति के समान जगमगाता है और साम के सहारे ऊपर ब्रह्मलोक में पहुंच जाता है (**स तेजसि सूर्ये सम्पन्नः। यथा पादोदरस्त्वचा विनिर्मुच्यत एवं ह वै स पाप्मना विनिर्मुक्तः स सामभिरुन्नीयते। ब्रह्मलोकं स एतस्माज्जीव घनात्परात्परं पुरिशयं पुरुषमीक्षते ।**)

इस प्रकार बतलाया जा चुका है– 'एकमात्र' ओङ्कार का अर्थ है, ओङ्कार की कुछ-कुछ उपासना- 'द्विमात्र' का अर्थ है–पर्याप्त रूप में ओङ्कार की आराधना करना और 'त्रिमात्र' का अर्थ हुआ कि ओङ्कार की उपासना में ही निमग्न हो जाना । पृथिवी, सोम तथा सूर्य लोकों की चर्चा मानसिक स्थितियों में क्रमिक उन्नयन की स्थिति अभिव्यक्त करती है । पृथिवी लोक का तात्पर्य है– भौतिक सुखों की प्राप्ति, सोमलोक का तात्पर्य हुआ, व्यक्ति को मानसिक शान्ति मिल गई और सूर्यलोक का अभिप्राय हुआ कि व्यक्ति में आध्यात्मिक ज्योति प्रज्वलित हो गई। ओङ्कार की तीनों मात्राएं एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। अ-उ-म् की तीनों मात्राएं मरणधर्मा हैं । (**तिस्त्रः मात्राः मृत्युमत्यः प्रयुक्ताः**) इनके ठीक प्रयोग से साधक का मायामोह मर जाता है । आत्मा के एक पार्श्व में संसार है दूसरी ओर पर ब्रह्म है । इस अवस्था में मानव कई बार ब्रह्म को भूल जाता है । संसार के मायामोह में फंस जाता है । यदि यह अवस्था पलट दी जाए तो साधक संसार को भूल कर ब्रह्म में लीन हो जाता है । ऋषि ने बतलाया है–तीनों मात्राएं एक साथ हों–एक दूसरे से मिली होनी चाहिए, वे अलग-अलग न हों



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

**( अन्योन्यसक्ताः अनविप्रमुक्ताः )** मात्राओं का प्रयोग स्पष्ट करने के लिए बाह्य, आभ्यन्तर-मध्यम क्रिया जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाओं के क्रमशः उन्नयन से योगी पुरुष का मन भटकता नहीं, योगाभ्यास से संयुक्त करता है । **( क्रियासु बाह्य-आभ्यन्तर-मध्यमासु सम्यक् प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः।)**

ऋषि पिप्पलाद जिज्ञासु को बतलाते हैं--ऋग्वेद की ऋचाओं से उपासक पृथिवी में विद्यमान भोग-ऐश्वर्य प्राप्त कर सकता है । यजुर्वेद के मन्त्रों से चन्द्रलोक की सौम्यता प्राप्त कर सकता है । आप्तजनों की मान्यता है कि सामगान से उपासक सूर्य लोक का तेज उपलब्ध कर सकता है । इस प्रकार 'त्रिमात्र' ओङ्कार की उपासना के माध्यम से परात्पर शान्त, अजर, अभय-ब्रह्मलोक को प्राप्त कर सकता है। सम्बन्धित मन्त्र इस प्रकार है--

**ऋग्भिरेतं यजुर्भिरन्तरिक्षं स सामभिर्यत्तत्कवयो वेदयन्ते । तमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान् यत्तच्छान्तमजरममृतमभयं परं चेति।।७।।**

इस प्रकार पिप्पलाद ऋषि ने बतलाया कि एकमात्र और द्विमात्र ओङ्कार की उपासना से उतना लाभ नहीं होता जितना त्रिमात्र ओङ्कार का ध्यान-जीवन भर ओङ्कार की लगन से । ओङ्कार की जीवन पर्यन्त उपासना से संसार का सुख ऐश्वर्य तो मिलता ही है, मानसिक शान्ति और दिव्य आध्यात्मिक ऐश्वर्य, तेज की उपलब्धि हो जाती है ।

## सोलह कलाओं वाला पुरुष कौन ?

अभी तक पांच जिज्ञासुओं की पांच जिज्ञासाओं की चर्चा की जा चुकी है । **जिज्ञासु कबन्धी** ने जिज्ञासा की थी कि सृष्टि किससे उत्पन्न हुई । ऋषि पिप्पलाद ने प्राण और रयि के द्वित्व की चर्चा की। **दूसरे जिज्ञासु भृगुगोत्री वैदर्भि** ने जिज्ञासा की कि सृष्टि कौन धारण करता है? ऋषि पिप्पलाद ने समाधान किया कि प्राण ही ब्रह्माण्ड और पिण्ड को धारण किए हुए है । **तीसरे जिज्ञासु कौशल्य आश्वलायन** ने जिज्ञासा की कि यह प्राण कहां से आता है और कहां रहता है ? ऋषि पिप्पलाद ने बतलाया जो उपासक प्राण की उत्पत्ति से अध्यात्म के रहस्य को जान लेता है । वह अमृतत्व का आस्वादन करता है । **चौथे जिज्ञासु सौर्यायणी** ने शारीरिक स्तर से ऊपर उठ कर मानसिक स्तर की चर्चा की । पिप्पलाद ने बतलाया कि पिण्ड ब्रह्माण्ड का आश्रयस्थल वही है । **पांचवें जिज्ञासु सत्यकाम** ने पूछा था ओङ्कार में ध्यान का क्या लाभ है? ऋषि पिप्पलाद ने पथ-प्रदर्शन किया था।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन भर त्रिमात्र ओङ्कार की उपासना से सांसारिक सुख के साथ मानसिक शान्ति और तेज भी मिल सकता है ।

**छठे जिज्ञासु भारद्वाज गोत्री सुकेश भारद्वाज** ने पूछा–''भगवन्, हिरण्यनाभ नामक कौशल देश के राजकुमार ने मेरे से जिज्ञासा की थी– भारद्वाज, क्या तुम सोलह कलाओं वाले पुरुष को जानते हो? मैने उनसे निवेदन किया था, ''मैं नहीं जानता, यदि जानता होता तो अवश्य बतलाता, इसलिए मैं असत्य बोलने में समर्थ नहीं हूं । मेरा उत्तर सुनकर राजकुमार चुपचाप रथ पर चढ़ कर चला गया । इसलिए आप मुझे बतलाइए वह सोलह कलाओं वाला पुरुष कहां है ?

ऋषि पिप्पलाद ने उत्तर दिया–'हे सौम्य, यहां शरीर के अन्दर ही वह पुरुष है, जिसमें ये सोलह कलाएं उत्पन्न होती हैं ।' सम्बद्ध ऋचा इस प्रकार है–

**तस्मै स होवाच इहैवान्तःशरीरे सोम्य स पुरुषो यस्मिन्नेताः षोडश कलाः प्रभवन्तीति ॥२॥**

जब इस शरीर में सोलह कलाएं पैदा होती हैं, तो ये कलाएं दीखती क्यों नहीं हैं, वे सोलह कलाएं कहां हैं ? इस कुतूहल का समाधान करते हुए ऋषि पिप्पलाद कहते हैं– 'ये सोलह कलाएं शरीर के भीतर ही हैं, ऋषि पिप्पलाद ने एक परीक्षा विधि बतलाई । शरीर के अंश रूप शरीर की जो कलाएं हैं उन्हें पृथक् कर देखते जाओ । जिस कला की सब से अधिक महत्ता होगी उसके निकलते ही अन्य अंश कलाएं भी निकलने लगेंगी और उसके प्रतिष्ठित होने पर दूसरी कलाएं शरीर अंश भी प्रतिष्ठित हो जाएंगे । सब से पहले प्राण पर परीक्षण किया गया। प्राण निकलने लगा तो अन्य सभी शारीरिक अंश कलाएं भी निकलने को बाध्य हो गईं और जब प्राण प्रतिष्ठित हो गया तो दूसरी सब कलाएं शारीरिक अंश भी प्रतिष्ठित हो गए । इस परीक्षण से पता चल गया कि प्राण-कला ही सर्वोत्तम है। सम्बद्ध ऋचा इस प्रकार है–

**स ईक्षाञ्चक्रे । कस्मिन् अहमुत्क्रान्ते उत्क्रान्तो भविष्यामि कस्मिन्वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामीति ॥३॥**

ऋषि पिप्पलाद ने बतलाया–''उसने प्राण का सृजन किया । प्राण का सृजन करने के बाद उसी ने श्रद्धा का सृजन किया, फिर क्रमशः आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रियां, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्मलोक और नाम आदि सोलह कलाएं या क्रम अंश क्रम से रचे ।' इन सोलह कलाओं में सम्पूर्ण जगत् आ जाता है। मन्त्र इस प्रकार है–

**स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियम्। मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः कर्मलोकाः लोकेषु नाम च ॥४॥**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ये सोलह कलाएं पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड में दोनों में हैं । ऋषि बतलाते हैं–यद्यपि ये कलाएं भिन्न-भिन्न प्रतीत होती हैं तो भी जैसे भिन्न-भिन्न नदियां समुद्र में जाकर एक हो जाती हैं, वैसे ही जिस आत्मा या परमात्मा में जाकर भिन्न-भिन्न न रह कर एक हो जाती हैं । जैसे नदियों का पृथक् रूप नहीं रहता, पृथक् नाम रूप छिन्न-भिन्न होकर समुद्र रूप हो जाता है, उसी प्रकार सोलह कलाएं पृथक् नाम-रूप छोड़ कर एक पुरुष रह जाता है । (**स यथा इमाः नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रं प्राप्य अस्तं गच्छन्ति, भिद्येते तासां नामरूपे, समुद्र इति एव प्रोच्यते । एवम् एव अस्य परिद्रष्टुः षोडश कलाः पुरुषायणाः पुरुषं प्राप्य अस्तं गच्छन्ति । भिद्येते चासां नामरूपे पुरुष इत्येवं प्रोच्यते ।**)

ऋषि समुद्र में नदियों के एकाकार हो जाने पर दृष्टान्त देते हुए बतलाते हैं । इसी प्रकार रथ की नाभि में रथ के भिन्न-भिन्न अरे जुड़ जाते हैं (**अरा इव रथनाभौ कला यस्मिन्प्रतिष्ठिताः ।**)

ऋषि पिप्पलाद ने छओं जिज्ञासुओं से कहा– "मैं उसी परम ब्रह्म को जानता हूँ, उससे आगे कुछ नहीं है ।" उन सभी जिज्ञासुओं ने ऋषि की अर्चना करते हुए कहा–"आप हमारे पिता हैं, जिन्होंने हमें अविद्या के अन्धकार से तार दिया । आप परम ऋषि हैं, आपको बार-बार नमस्कार है ।" (**त्वं हि नः पिता, यः अस्माकमविद्यायाः परं पारं तारयति, नमः परम ऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्यः ।**)

इस प्रश्न उपनिषद् में ऋषि पिप्पलाद के पास छह जिज्ञासु अपनी-अपनी जिज्ञासा का समाधान करने के लिए पहुंचे । यह सृष्टि किससे उत्पन्न हुई, सृष्टि के मूल तत्त्व प्राण, रयि हैं । प्राण ही ब्रह्माण्ड और पिण्ड को धारण करता है । प्राण का रहस्य क्या है । पिण्ड और ब्रह्माण्ड में व्याप्त प्राण की साधना कैसे सम्भव है । त्रिमात्र ओङ्कार की सच्ची साधना से मानव भौतिक एवम् आध्यात्मिक सुख-शान्ति प्राप्त कर पृथक् नाम रूप छोड़ कर परम पुरुष में परम गति प्राप्त कर सकता है ।

☆ ☆ ☆

–नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

–अभ्युदय सी-२२, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली ११००४६



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# एक ही रास्ता

## ( प्रश्न अनेक—उत्तर एक )

मेरे एक मित्र ने कुछ प्रश्न किये—आज भाई-भाई से, पुत्र-पिता से, पति-पत्नी से क्यों अलग हो रहे हैं अथवा अलग होना चाहते हैं? एक जाति या सम्प्रदाय दूसरी जाति या सम्प्रदाय से क्यों नफरत करती है? एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से अथवा एक देश दूसरे देश से द्वेष क्यों करते हैं? इन सब बातों का मूल कारण क्या है?

उपर्युक्त सभी प्रश्नों का मूल कारण एक ही है। जब से संसार के स्त्री-पुरुष वेद-ज्ञान रूपी सत्य-पथ से भटक गये हैं, तभी से यह विघटन, द्वेष अथवा अलग होने की भावनाएँ उत्पन्न हो गई हैं। तथा इन सब का एकमात्र समाधान भी यही है कि हम सभी समस्त संसार के निर्माता उस एक ही प्रभु की आज्ञा व शिक्षाओं—(जो चार वेदों के रूप में हैं) के अनुसार अपने आचरण में लाकर कर्त्तव्य कर्मों को निष्ठा के साथ करने लग जायें, तो समस्त संसार सुख, शान्ति एवम् आनन्द से परिपूर्ण हो जाएगा।

**"यस्य छाया अमृतम्।"**—यजुः० २५।१३

जिसकी 'छाया' अर्थात् आज्ञा व शिक्षा के अनुसार आचरण करने, कर्म करने से ही अमृत के समान समस्त सुख प्राप्त होते हैं।

परिवारों की समस्त समस्याएँ निम्न वेद मन्त्रों के अनुसार आचरण, व्यवहार करने से हल हो जायेंगी।

**अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।**
**जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्॥**

पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, माता में श्रद्धा रक्खे। पत्नी मधुरभाषिणी होवे, पति शान्त और मधुर व्यक्तित्ववाला हो।

**मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।**
**सम्यञ्चः सव्रताः भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥**

भाई-भाई के साथ, बहिन-बहिन के साथ तथा भाई-बहिन परस्पर द्वेष न करें। आपस में सदा ही सुखदायक, कल्याणकारी वाणी बोलें।

निम्न मन्त्र में वेदमाता प्रत्येक गृहस्थ को सात मर्यादाओं का पालन करने का आदेश दे रही है, जिसका पालन करने से हमारे घर-परिवार स्वर्गधाम बन सकते हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

**ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट, संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।**
**अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत, सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि॥**

—अथर्व० ३।३०।५

१. ज्यायस्वन्तः—बड़ों का मान-आदर करनेवाले बनो।

२. चित्तिनः—जो भी काम करो बहुत समझदारी से निष्ठापूर्वक करो।

३. मा वियौष्ट—एक दूसरे से कभी रुष्ट मत होओ, अलग मत होओ।

४. सं राधयन्तः—परस्पर सहयोग करते हुए, एक दूसरे की उन्नति में लगे रहो।

५. सधुराः चरन्तः—सब धुरी में जुड़े रहो। सब मिलकर परिश्रम करो। कोई खाली न बैठे।

६. अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत—एक दूसरे के प्रति वल्गु—सत्य, प्रिय और मधुरभाषण करते हुए व्यवहार करो।

७. सध्रीचीनान्—सहगामी-अनुकूलता के साथ व्यवहार करनेवाले बनो।

## सामाजिक संगठन के लिए

**सं गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**
**देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥**

—१०।१९१।२

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥

**समानी व आकूतीः समाना हृदयानि वः।**
**समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥**

—ऋ० १०।१९१।४

हों सभी के मन तथा सङ्कल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा॥

समाज, राष्ट्र एवं विश्व से ऊँच-नीच, छोटे-बड़े का भेद-भाव दूर करने के लिए—

**अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।**
**युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥**

—ऋ० ५।६०।५

(एते भ्रातरो) ये सब भाई-भाई हैं, (अ-ज्येष्ठासः अ-कनिष्ठासः) न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है, (सौभगाय सं वावृधुः) सौभाग्य के लिए परस्पर मिलकर


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्नति करो (युवा सु-अपा-रुद्रः) युवा, सुकर्मा, सुदृढ़ राष्ट्र (एषाम्-पिता) इनका पिता है। (सुदुघा-पृश्निः) सु-दुहा मातृभूमि (मरुद्भ्यः सु-दिना) सब नागरिकों के लिए सु-दिनों का दोहन करनेवाली है।

राष्ट्र सब का पिता है, भूमि सब की माता है। सब सहोदर हैं, सगे भाई हैं, न कोई छोटा, न कोई बड़ा, न कोई ऊँचा और न कोई नीचा है। सब एक ही माता-पिता की सन्तान हैं। सब (चारों वर्ण) आपस में मिलकर एक होकर अपने पितृराष्ट्र और अपनी मातृभूमि की सेवा और उन्नति करें।

## विश्व-बन्धुत्व की भावना जगाने के लिए

**"शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः।"**—य० ११।५

ऐ संसार के मानवो! तुम सब एक ही भगवान् (अमृत) की सन्तान हो, वह अजर है, अमर है। एक ही पिता के पुत्र-पुत्री होने से तुम भाई-भाई और बहन-बहन हो।

**"इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः॥**

—ऋ० ९।६३।५

(विश्वम् आर्यम् कृण्वन्तः) विश्व को आर्य बनाते हुए, (इन्द्रं वर्धन्तः) आत्मा को बढ़ाते हुए (अप्-तुरः) त्वरा के साथ कर्म साधनाओं को करते हुए, (अराव्णः अपघ्नन्तः) कृपणताओं को दूर भगाते हुए हमें विश्व में विचरना है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।' कितना सुन्दर घोष है। हम इस भूमण्डल के समस्त मानवों को आर्य बनायें। आर्य उसे कहते हैं—जिसके विचार, आचार, आहार और व्यवहार ये चारों शुद्ध हों। अंग्रेज आर्य हो सकता है, रूसी आर्य हो सकता है, अमेरिकन आर्य हो सकता है, ईरानी, जापानी, चीनी सब आर्य हो सकते हैं। वेद के अनुसार संसार में दो प्रकार के ही मानव हैं—(१) आर्य (२) अनार्य। जो असंयमी, दुराचारी हैं वे अनार्य हैं।

अब अगले मन्त्र में वेदमाता संसार के समस्त मानवों का एक ही धर्म बतला रही है—**'मनुर्भव।'**

**तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।**
**अनुल्वणं वयत जोगुवाम् अपो वयत मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥**

—ऋ० १०।५३।६

(रजसः तन्तुम् तन्वन्) लोक के ताने को तानता हुआ (भानुम् अनु इहि) सूर्य का अनुगमन कर। (धिया कृतान्) बुद्धि द्वारा कृत (ज्योतिष्मतः पथो रक्ष) ज्योतिर्मय पथों की रक्षा कर। (जोगुवाम् अन-उल्वणं अपः वयत) उपदेष्टाओं के


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सार्थक कर्मों को कर। (मनुः भव) मननशील बन। (दैव्यं जनम् जनय) दिव्य जन (पुत्र/पुत्री) को जन्म दे।

संसार के सम्पूर्ण मानवों (स्त्री/पुरुषों) को जीवन सफल बनाने के लिए इस मन्त्र में मननशील, सोच समझकर काम करनेवाला बनने का तथा स्वयं दिव्य गुणों से युक्त होकर श्रेष्ठ गुणों से युक्त सन्तान को जन्म देने का आदेश दिया है।

एक ही परम पिता की सन्तानें होने से हम सभी संसार के मानवों का एक ही धर्म है और वह है 'मानव धर्म।' मानव धर्म की कसौटी महर्षि व्यास जी ने इस प्रकार बतलाई है—'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्।' अर्थात् जो काम हम दूसरों से अपने लिए नहीं चाहते, वैसा हम भी दूसरों के प्रति न करें। राजर्षि मनु ने समस्त संसार के मानवों को धर्म के निम्न दस लक्षणों को धारण करने के लिए कहा है—

**धृतिः क्षमा दमो अस्तेयं शौचम् इन्द्रियनिग्रहः।**
**धीर्विद्या सत्यम् अक्रोधो दशकम् धर्मलक्षणम्॥**

आज का मानव ऋषियों एवं परमात्मा के आदेशों/शिक्षाओं की अवहेलना करके दानव बनकर समस्त संसार को सर्वनाश के मार्ग पर ले जा रहा है। प्रभु की सर्वश्रेष्ठ रचना 'अमृतपुत्र' जिसे देवता/फरिश्ते भी नमन करते थे, आज अमृत की तलाश में अशान्त होकर भटक रहा है।

आज संसार में कोई ईसाई बनने पर बल दे रहा है, कोई मुसलमान बनने पर तो कोई बौद्ध, जैन या सिक्ख बनने पर बल दे रहा है। आज किसी से पूछो 'आप कौन हैं' तो उत्तर मिलेगा 'मैं ईसाई हूँ' 'मैं मुसलमान हूँ' 'मैं सिक्ख हूँ' अथवा कोई कहेगा 'मैं अमेरिकन हूँ', 'मैं जर्मन हूँ', 'मैं जापानी हूँ', अथवा कोई कहेगा। 'मैं काँग्रेसी हूँ' 'मैं साम्यवादी हूँ', 'मैं समाजवादी हूँ। यह कहते कोई नहीं मिलेगा 'मैं मानव हूँ' या 'मैं इन्सान हूँ।'

मनुष्य यदि सचमुच इन्सान बन जाये तो संसार के सारे उपद्रव, कष्ट व समस्याएँ दूर होकर सारा संसार एक ही परिवार ''वसुधैव कुटुम्बकम्' बन जाये।

किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है—

आदमी आदमी जो बन जाये।
कष्ट सारे जहाँ का मिट जाये॥
खुदा तो मिलता है, इन्सान ही नहीं मिलता।
ये चीज़ वह है कि देखी कहीं-कहीं मैंने॥

—कृष्णऔतार, बढ़ापुर (बिजनौर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे

लेखक : **स्वामी विद्यानन्द सरस्वती**

प्रकाशक : **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द**
नई सड़क, दिल्ली

मूल्य : **४० रुपये**

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास मे शंकराचार्य प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त की समीक्षा करते हुए यह लिखा है कि यदि शंकर ने जैन, बौद्ध आदि अवैदिक नास्तिक मतों के खण्डन के उद्देश्य से ब्रह्मैक्यवाद का प्रतिपादन किया तब तो इसे कुछ अच्छा कहा जा सकता है अन्यथा उन्होंने जीव-ब्रह्म की एकता तथा प्रकृति के मिथ्यात्व का निरूपणा करने वाले शाङ्कर अद्वैत का खण्डन ही किया है। ऋषि के इसी कथन से प्रेरणा लेकर दर्शनों के श्रेष्ठ विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना की है। यह भी ध्यान देने की बात है कि स्वामी दयानन्द के शंकर विषयक विचार पर्याप्त प्रशंसा वाले हैं। स्वामी विद्यानन्द जी का विचार है कि जैन बौद्धादि के निराकरण के लिए शंकर ने 'जल्प' का सहारा लेकर ही अपने दार्शनिक मत का उपपादन किया, अन्यथा उनके प्रस्थानत्रयी भाष्य में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनसे जीवेश्वर भेद तथा उपादान कारण-प्रकृति की यथार्थता का संकेत मिलता है।

स्वकथन की पुष्टि के लिए विद्वान् लेखक ने वेदान्तदर्शन के १८ सूत्रों के शांकर भाष्य को उद्धृत कर सोपपत्तिक सिद्ध किया है कि ये सभी सूत्र तथा इन पर लिखा आचार्यपाद का भाष्य जीव एवम् ईश्वर की पृथक्ता को ही सिद्ध करता है। यों तो शंकर स्वयं भी मानते हैं कि व्यवहार दृष्टि से जीव एवम् ईश्वर में पृथक्ता है किन्तु वे इस भेद को अविद्याजन्य, मायोपाधि के कारण उत्पन्न हुआ मानते हैं। ध्यातव्य यह है कि आचार्य बादरायण के जिन सूत्रों पर शंकर ने भाष्य किया है वे सूत्र मूल रूप में कहीं यह संकेत नहीं देते कि जीवेश्वर भेद का कारण अविद्या या माया है। इसी प्रकार उपनिषदों तथा गीता के भी शंकरकृत व्याख्यान को आधार बना कर स्वामी विद्यानन्द जी ने आचार्य को भेदवादी सिद्ध किया है। शंकर ने तो अपने विवेचन का आधार ही व्यवहारवादी और पारमार्थिक दो प्रकार की दृष्टियों को बनाया है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यवहार में वे उन सभी बातों को स्वीकार करते हैं जिन्हें द्वैतवादी या आर्यसमाज के समान त्रैतवादी दार्शनिक यथार्थ मानते हैं । झगड़ा इसी बात को लेकर है कि सब कुछ साफ-साफ लिख देने के पश्चात् शंकर पुनः इसी बात का राग अलापने लगते हैं कि यह जगत्, यह सृष्टि, यह भक्ति, उपासना, यज्ञादि कर्म सब कुछ व्यावहारिक दृष्टि से ठीक हैं किन्तु परमार्थतः तो एक अद्वितीय, निर्लेप ब्रह्म ही सत्य है । जो भेद या विविधता दिखाई देती है वह सब माया जन्य ही है । इस प्रकार शंकर का सारा चिन्तन ही वदतोव्याघातदोष से दूषित सिद्ध हो जाता है । स्वामी विद्यानन्द जी ने अद्वैत वेदान्त के निराकरण में तत्त्वमसि, द्वैतसिद्धि, अनादि तत्त्वदर्शन आदि अन्य भी महत्त्व पूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं । प्रस्तुत ग्रन्थ भी उनका इसी शृंखला की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है । दर्शन शास्त्र के अध्येताओं में इस ग्रन्थ का प्रचार होना चाहिए ।

—डा. भवानीलाल भारतीय

## सूचना

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी 1 मार्च 1995 से नवनिर्मित आश्रम में जा रहे हैं । उनका नया पता है— वेद मन्दिर, लेखराम नगर (इब्राहिमपुर), दिल्ली-36

12 मार्च 1995 को नये भवन का उद्घाटन हो रहा है । इस अवसर पर स्वामी जी वेदप्रकाश के सभी सदस्यों तथा पाठकों को आमन्त्रित कर रहे हैं । भारी संख्या में पहुँचें ।

आश्रम बनवाने में स्वामी जी पिछले दो महीनों में व्यस्त रहे । इसी कारण 'मूल वेद-प्रकाशन-योजना' तथा 'स्वामी दर्शनानन्द-ग्रन्थ-संग्रह योजना' के कार्य में विलम्ब हुआ । परन्तु मार्च से स्वामी जी जोर-शोर से इस कार्य में लगेंगे तथा शीघ्र ही दोनों योजनाएं पूरी की जाएंगी ।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# आचार्य उदयवीर शास्त्री ग्रन्थावली

(पृष्ठ संख्या ७००० के लगभग डिमाई आकार में)

## ग्रन्थावली में सम्मिलित ग्यारह ग्रन्थ

| | | |
|---|---|---|
| १. | न्यायदर्शन भाष्य | १५०-०० |
| २. | वैशेषिकदर्शन भाष्य | १२५-०० |
| ३. | सांख्यदर्शन भाष्य | १००-०० |
| ४. | योगदर्शन भाष्य | १२५-०० |
| ५. | वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र) | १८०-०० |
| ६. | मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य | ३५०-०० |
| ७. | सांख्यदर्शन का इतिहास | २५०-०० |
| ८. | सांख्य सिद्धान्त | २००-०० |
| ९. | वेदान्तदर्शन का इतिहास | २००-०० |
| १०. | प्राचीन सांख्य सन्दर्भ | १००-०० |
| ११. | वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह) | २५०-०० |


## फार्म ४

(देखिए नियम ८-बी)

प्रकाशन का स्थान — दिल्ली — सम्पादक का नाम, पता आदि उपरलिखित
प्रकाशन की अवधि — मासिक
मुद्रक का नाम — अजय कुमार
क्या भारत का नागरिक है? — हाँ
पता — ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६
प्रकाशक का नाम, पता आदि उपरलिखित

मैं अजयकुमार एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिल्ली,
१-३-९५

अजयकुमार
प्रकाशक के हस्ताक्षर




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-प्रदायिनी
**महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती की**
सरल-सुबोध आध्यात्मिक पुस्तकें

| | |
|---|---|
| आनन्द गायत्री कथा | १२-०० |
| एक ही रास्ता | १२-०० |
| शंकर और दयानन्द | ८-०० |
| मानव जीवन-गाथा | १३-०० |
| सत्यनारायण व्रत कथा | ५-०० |
| भक्त और भगवान | १२-०० |
| उपनिषदों का सन्देश | १६-०० |
| घोर घने जंगल में | २०-०० |
| मानव और मानवता | ३०-०० |
| प्रभु मिलन की राह | २०-०० |
| यह धन किसका है ? | २०-०० |
| बोध-कथाएँ | १६-०० |
| दो रास्ते | १५-०० |
| दुनिया में रहना किस तरह ? | १५-०० |
| तत्वज्ञान | २०-०० |
| प्रभु-दर्शन | १५-०० |
| प्रभु-भक्ति | १२-०० |
| महामन्त्र | १२-०० |
| सुखी गृहस्थ | ६-०० |
| त्यागमयी देवियाँ | ८-०० |

**अंग्रेजी पुस्तकें**

| | |
|---|---|
| Anand Gayatry Katha | 30-00 |
| The Only Way | 30-00 |
| Bodh Kathayen | 40-00 |
| How To Lead Life? | 30-00 |

**जीवनी**

| | |
|---|---|
| महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू) | १०-०० |
| महात्मा आनन्द स्वामी (हिन्दी) | २५-०० |

**स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत**
**विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें**

| | |
|---|---|
| महाभारतम् (तीन खण्ड) | ६००-०० |
| वाल्मीकि रामायण | १७५-०० |
| षड्दर्शनम् | १५०-०० |
| चाणक्यनीति दर्पण | ६०-०० |
| विदुरनीतिः | ४०-०० |
| ब्रह्मचर्य गौरव | ९-०० |
| विद्यार्थियों की दिनचर्या | ९-०० |
| दिव्य दयानन्द | १२-०० |
| कुछ करो कुछ बनो | १२-०० |
| मर्यादा पुरुषोत्तम राम | १२-०० |
| आदर्श परिवार | १५-०० |
| वैदिक उदात्त भावनाएँ | १५-०० |
| वेद सौरभ | १२-०० |
| दयानन्द सूक्ति और सुभाषित | २५-०० |
| वैदिक विवाह पद्धति | ८-०० |
| ऋग्वेद सूक्ति सुधा | २५-०० |
| यजुर्वेद सूक्ति सुधा | १२-०० |
| अथर्ववेद सूक्ति सुधा | १५-०० |
| सामवेद सूक्ति सुधा | १२-०० |
| ऋग्वेद शतकम् | ८-०० |
| यजुर्वेद शतकम् | ८-०० |
| सामवेद शतकम् | ८-०० |
| अथर्ववेद शतकम् | ८-०० |
| भक्ति संगीत शतकम् | ६-०० |
| चमत्कारी ओषधियाँ | १२-०० |
| घरेलू ओषधियाँ | १२-०० |
| चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द) | ५०-०० |
| स्वर्ण पथ | १२-०० |
| प्रार्थना लोक | ४०.०० |
| प्रार्थना-प्रकाश | ८.०० |
| प्रभात-वन्दन | ८.०० |
| शिवसंकल्प | ८.०० |




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

| | | |
|---|---|---|
| आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे | *स्वामी विद्यानन्द सरस्वती* | ४०-०० |
| वेद-मीमांसा | *स्वामी विद्यानन्द सरस्वती* | ५०-०० |
| सृष्टि विज्ञान और विकासवाद | *स्वामी विद्यानन्द सरस्वती* | ४०-०० |
| वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार | *पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार* | १५०-०० |
| दयानन्द जीवन चरित | *लेखक : देवेन्द्र मुखोपाध्याय अनु० : पं० घासीराम* | २५०-०० |
| शतपथब्राह्मण (तीन खण्ड) | *अनु० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय* | १८००-०० |
| महात्मा हंसराज (जीवनी) | *प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु* | ६०-०० |
| महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (चार खण्ड) | *लेखक-सम्पादक प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु* | २४०-०० |
| आर्य सूक्ति सुधा | *प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु* | १२-०० |
| स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (ग्यारह खण्ड) | *ले० स० डॉ० भवानीलाल भारतीय तथा प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु* | ६६०-०० |
| चयनिका | *क्षितीश वेदालंकार* | १२५-०० |
| वैदिक मधुवृष्टि | *पं० रामनाथ वेदालंकार* | ६०-०० |
| वेदोद्यान के चुने हुए फूल | *आ० प्रियव्रत वेदवाचस्पति* | ५०-०० |
| महाभारत सूक्तिसुधा | *पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण* | ४०-०० |
| श्यामजी कृष्ण वर्मा | *डॉ० भवानीलाल भारतीय* | २४-०० |
| आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय | *डॉ० भवानीलाल भारतीय* | २५-०० |
| कल्याणमार्ग का पथिक (स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी) | *डॉ० भवानीलाल भारतीय* | प्रेस में |
| आर्यसमाज के बीस बलिदानी | *डॉ० भवानीलाल भारतीय* | १५-०० |
| धर्म का स्वरूप | *डॉ० प्रशान्त वेदालंकार* | ५०-०० |
| ऋषि बोध कथा | *स्वामी वेदानन्द सरस्वती* | १०-०० |
| वैदिक धर्म | *स्वामी वेदानन्द सरस्वती* | २५-०० |
| ईश्वर का स्वरूप | *सुरेशचन्द्र वेदालंकार* | प्रेस में |
| सहेलियों की वार्ता | *सुरेशचन्द्र वेदालंकार* | २०-०० |
| सन्ध्या रहस्य | *पं० विश्वनाथ विद्यालंकार* | २५-०० |
| आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ? | *प्रो० रामविचार एम० ए०* | ४-०० |
| वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय | *ओम्प्रकाश त्यागी* | ६-०० |
| पूर्व और पश्चिम | *नित्यानन्द पटेल* | ३५-०० |
| सन्ध्या विनय | *नित्यानन्द पटेल* | ६-०० |
| गीत सागर | *पं० नन्दलाल वानप्रस्थी* | २५-०० |
| वेद भगवान बोले | *पं० वा० विष्णुदयाल (मारीशस)* | १५-०० |
| हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष | *पं० नरेन्द्र* | १५-०० |
| आचार्य शंकर का काल | *आ० उदयवीर शास्त्री* | १०-०० |



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

| | | |
|---|---|---|
| याज्ञिक आचार-संहिता | पं० वीरसेन वेदश्रमी | ४५-०० |
| प्राणायाम विधि | महात्मा नारायण स्वामी | २-०० |
| प्रेरक बोध कथाएँ | नरेन्द्र विद्यावाचस्पति | १५-०० |
| ओंकार गायत्री शतकम् | कवि कस्तूरचन्द | ३-०० |
| जीवात्मा | पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय | ४०.०० |
| सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे | पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय | १५-०० |
| विवाह और विवाहित जीवन | पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय | १८-०० |
| जीवन गीत | धर्मजित् जिज्ञासु | १२-०० |
| पंचमहायज्ञविधि | महर्षि दयानन्द | ३-०० |
| व्यवहारभानु | महर्षि दयानन्द | ४-०० |
| आर्योद्देश्यरत्नमाला | महर्षि दयानन्द | १-५० |
| स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश | महर्षि दयानन्द | १-५० |
| ब्रह्मचर्यसन्देश | सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार | २५-०० |
| श्रीमद्भगवद्गीता | पं० सत्यपाल विद्यालंकार | १५-०० |

## WORKS OF SVAMI SATYAPRAKASH SARASVATI

| | |
|---|---|
| Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.) | 500-00 |
| Coinage in Ancient India (Two Vols.) | 600-00 |
| Geometry in Ancient India | 350-00 |
| Brahmgupta and His Works | 350-00 |
| God and His Divine Love | 5-00 |
| The Critical and Cultural Study of Satapath Brahman | In Press |
| Speeches, Writings & Addresses Vol.I : VINCITVERITAS | 150-00 |
| Speeches Writings & Addresses Vol.II : ARYA SAMAJ; A RENAISSANCE | 150-00 |
| Speeches, Writings & Addresses Vol. III : DAYANAND ; A PHILOSOPHER | 150-00 |
| Speeches, Writings & Addresses Vol. IV THREE LIFE HAZARDS | 150-00 |

## कर्म काण्ड की पुस्तकें

| | | | |
|---|---|---|---|
| आर्य सत्संग गुटका | ३-०० | संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू) | ८-०० |
| पंचयज्ञ प्रकाशिका | ८-०० | सत्संग मंजरी | ६-०० |
| वैदिक संध्या | १-०० | Vedic Prayer | 3-00 |
| सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य) | १२-०० | | |

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi



मार्च १९९५

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## घर का वैद्य

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको आसानी से उपलब्ध हों तो गोली, पुड़िया, कैप्सूल या इन्जेक्शन की क्या जरूरत है ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| घर का वैद्य—प्याज | ७-०० | घर का वैद्य—हल्दी | ७-०० |
| घर का वैद्य—लहसुन | ७-०० | घर का वैद्य—बरगद | ७-०० |
| घर का वैद्य—गन्ना | ७-०० | घर का वैद्य—दूध-घी | ७-०० |
| घर का वैद्य—नीम | ७-०० | घर का वैद्य—दही-मट्ठा | ७-०० |
| घर का वैद्य—सिरस | ७-०० | घर का वैद्य—हींग | ७-०० |
| घर का वैद्य—तुलसी | ७-०० | घर का वैद्य—नमक | ७-०० |
| घर का वैद्य—आँवला | ७-०० | घर का वैद्य—बेल | ७-०० |
| घर का वैद्य—नींबू | ७-०० | घर का वैद्य—शहद | ७-०० |
| घर का वैद्य—पीपल | ७-०० | घर का वैद्य—फिटकरी | ७-०० |
| घर का वैद्य—आक | ७-०० | घर का वैद्य—साग-भाजी | ७-०० |
| घर का वैद्य—गाजर | ७-०० | घर का वैद्य—अनाज | ७-०० |
| घर का वैद्य—मूली | ७-०० | घर का वैद्य—फल-फूल | ७-०० |
| घर का वैद्य—अदरक | ७-०० | घर का वैद्य—धूप-पानी | १५-०० |

**सभी छब्बीस पुस्तकें छः आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध**

| | |
|---|---|
| घर का वैद्य-१ (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस) | ४५-०० |
| घर का वैद्य-२ (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक) | ४५-०० |
| घर का वैद्य-३ (गाजर, मूली, अदरक, हल्दी, बरगद) | ४५-०० |
| घर का वैद्य-४ (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल) | ४५-०० |
| घर का वैद्य-५ (शहद, अनाज, फिटकरी, साग-भाजी, फल-फूल) | ४५-०० |
| घर का वैद्य—धूप-पानी | ४०-०० |

## चित्र

| | | |
|---|---|---|
| स्वामी दयानन्द (झण्डेवाला) | १६" × २२" बहुरंगी | ६-०० |
| स्वामी दयानन्द (कुर्सी) | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |
| स्वामी दयानन्द (आसन) | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |
| स्वामी श्रद्धानन्द | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |
| गुरु विरजानन्द | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |
| पण्डित लेखराम | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |
| स्वामी दर्शनानन्द | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |
| पं० गुरुदत्त विद्यार्थी | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |
| महात्मा हंसराज | १८" × २२" एक रंग | ३-०० |



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



**आर्य नेताओं की बालोपयोगी जीवनियाँ**

| | | |
|---|---|---|
| महर्षि दयानन्द | त्रिलोकचन्द विशारद | ४-५० |
| गुरु विरजानन्द | त्रिलोकचन्द विशारद | ४-५० |
| स्वामी श्रद्धानन्द | त्रिलोकचन्द विशारद | ४-५० |
| धर्मवीर पं० लेखराम | त्रिलोकचन्द विशारद | ३-०० |
| मुनिवर पं० गुरुदत्त | त्रिलोकचन्द विशारद | ३-०० |
| स्वामी दर्शनानन्द | सत्यभूषण वेदालंकार | ३-०० |
| महात्मा हंसराज | प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु | ४-५० |
| वीतराग सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द | प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु | ४-५० |
| तपोधन महात्मा नारायण स्वामी | प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु | ५-५० |
| देवतास्वरूप भाई परमानन्द | प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु | ५-५० |
| नैतिक शिक्षा—प्रथम | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | २.५० |
| नैतिक शिक्षा—द्वितीय | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | २.५० |
| नैतिक शिक्षा—तृतीय | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ३.५० |
| नैतिक शिक्षा—चतुर्थ | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ४-५० |
| नैतिक शिक्षा—पंचम | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ४.५० |
| नैतिक शिक्षा—षष्ठ | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ५.५० |
| नैतिक शिक्षा—सप्तम | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ५.५० |
| नैतिक शिक्षा—अष्टम | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ५.५० |
| नैतिक शिक्षा—नवम | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ८०० |
| नैतिक शिक्षा—दशम | सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए० | ८०० |
| ब्रह्मचर्य गौरव | स्वामी जगदीश्वरानन्द | ९०० |
| विद्यार्थियों की दिनचर्या | स्वामी जगदीश्वरानन्द | ९०० |
| स्वर्ण पथ | स्वामी जगीदश्वरानन्द | १२०० |
| आचार्य गौरव | ब्र० नन्दकिशोर | ५०० |
| त्यागमयी देवियाँ | महात्मा आनन्द स्वामी | ८०० |
| हमारे बालनायक | सुनील शर्मा | ८०० |
| देश के दुलारे | सुनील शर्मा | ८०० |
| हमारे कर्णधार | सुनील शर्मा | ८०० |
| आदर्श महिलाएँ | नीरू शर्मा | ८०० |
| कथा पच्चीसी | स्वामी दर्शनानन्द | ८०० |
| बाल शिक्षा | स्वामी दर्शनानन्द | २.५० |
| वैदिक शिष्टाचार | हरिश्चन्द्र विद्यालंकार | ३०० |
| दयानन्द चित्रावली | पं० रामगोपाल विद्यालंकार | २५०० |
| आर्य सूक्ति सुधा | प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु | १२-०० |



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# साहित्य समीक्षा

आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठ प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द (अब नया नाम विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द) ने आर्य नेताओं, महात्माओं तथा विद्वानों के बालोपयोगी सरल शैली में लिखे जीवनचरित प्रकाशित करके पाठक वर्ग का असीम उपकार किया है। इसी शृंखला में कुछ जीवनचरित राजेन्द्र जिज्ञासु लिखित १९९४ में प्रकाशित हुए हैं।

**वीतराग स्वामी स्वतन्त्रानन्द** : लेखक प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु मूल्य : ४.५०
प्रकाशक : गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क, दिल्ली-६।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द के जीवन विषयक तथ्यों की खोज कर उनका समग्र एवं सर्वांगीण जीवनचरित लिखने का श्रेय प्रा० जिज्ञासु को ही है। आलोच्य पुस्तक एक लघु कृति है। जिसमें आर्यसमाज के इस योद्धा संन्यासी के जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं को सरल एवं रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ के अन्त में उनके कतिपय उपदेशो, वचनों को प्रस्तुत करने से इसकी उपयोगिता में वृद्धि हुई है। आशा है आर्य महापुरुषों के जीवनचरित पढ़ने में रुचि लेने वाले पाठक इसे अपनायेंगे।

**देवता स्वरूप भाई परमानन्द** : लेखक तथा प्रकाशक पूर्ववत्। मूल्य: ५.५०

भाई परमानन्द देशभक्त, उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ तथा देश हित के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाले महापुरुष थे। खेद है कि वे गांधी की आंधी में नहीं बहे और पूर्वाग्रह युक्त दृष्टि रखने वाले इतिहासकारों ने उनके त्याग और बलिदान का समुचित मूल्यांकन नहीं किया। भाई जी मूलत: आर्यसमाजी थे। भाई जी के जीवनचरितों की संख्या अधिक नहीं है। इसलिए प्रा० जिज्ञासु द्वारा लिखित इस जीवनी से भाई जी के अनेक ज्ञात अज्ञात जीवन बिन्दुओं से पाठक मुखातिब होगा। वैदिक धर्म के संदेश को भारत से भिन्न देशों में प्रचारित करने वाले वे प्रथम आर्य उपदेशक थे। अनेक स्रोतों से प्राप्त प्रसंगों द्वारा पुस्तक को रोचक तथा ज्ञान वर्धक बनाया है। पृष्ठ १७ पर 'ठग्गी' शब्द का प्रयोग भाषा दृष्टि से चिन्त्य है। यहां 'ठगी' होना चाहिए था।

**तपोधन महात्मा नारायण स्वामी** : लेखक तथा प्रकाशक पूर्ववत्। मूल्य : ५.५०

आर्यसमाज में सक्षम और प्रभावशाली नेतृत्व महात्मा नारायण स्वामी तक आकर समाप्त हो गया। एक साधारण मनुष्य भी अपनी साधना, तपस्या, कर्मठता तथा लगन के द्वारा आर्यसमाज जैसे क्रान्तिकारी आन्दोलन का सर्वोच्च नेता बन सकता है, नारायण स्वामी जी का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। महात्मा जी ने अपनी आत्मकथा में स्वजीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया था। किन्तु आत्मकथा के प्रकाशन के बाद के उनके जीवन को आधार बना कर उनके जीवन के समग्र क्रिया कलाप का संक्षिप्त इतिवृत्त आलोच्य पुस्तक में दिया गया है। महापुरुषों के जीवनचरित शाश्वत सत्य का उद्घाटन करते हैं अत: उन्हें निरपेक्ष ढंग से लिखा जाना चाहिए। इस दृष्टि से यदि इस पुस्तक में आर्यसमाज के किसी दल या संगठन की आलोचना नहीं भी रहती तब भी पुस्तक की उपयोगिता न्यून नहीं थी।

——डा० भवानीलाल भारतीय



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


## 1995 का कैलेण्डर

महर्षि दयानन्द के झण्डे वाले बहुरंगी चित्र के साथ अब उपलब्ध है। साईज २२"×२८" बढ़िया आर्ट पेपर पर, सुन्दर छपाई। मूल्य ५००-०० रु० प्रति सैकड़ा। आज ही अपना आदेश भेजें क्योंकि यह सीमित संख्या में ही छपा है।

**विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६**



## स्वामी जगदीश्वरानन्द जी कृत

### बहुत दिनों बाद प्रकाशित कुछ पुस्तकें

**प्रार्थना-प्रकाश :** यज्ञ से पूर्व स्तुति-उपासना के आठ मन्त्रों की व्याख्या।
मूल्य : ८.०० रु०

**प्रभात-वन्दन :** प्रातःकाल पाठ करने के मन्त्रों की सरल-सुबोध व्याख्या।
मूल्य : ८.०० रु०

**शिवसंकल्प :** शिवसंकल्प के छह मन्त्रों की विशद व्याख्या।
मूल्य : ८.०० रु०

**प्रार्थना-लोक :** प्रार्थना-प्रकाश, प्रभात-वन्दन, शिवसंकल्प
तीनों पुस्तकें सजिल्द, एक साथ। मूल्य : ४०.०० रु०



## वेद भगवान् बोले

लेखक : **प्रा० विष्णुदयाल** (मारीशस)

वेद विविध बहुमूल्य विचार-रूप रत्नों के रत्नाकर हैं। मानव के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान-विज्ञान, सदुपदेश एवं सत्प्रेरणाएँ इनमें निहित हैं। कहीं ईशस्तुति की दिव्य तरंग हैं; कहीं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की मंजुल कथा है; कहीं यज्ञ की पावनता है; कहीं त्याग, दान एवं तपस्या की परम्परा है। लेखक ने जिन-जिन विषयों पर लेख लिखे हैं, उन-उन विषयों से सम्बद्ध भावनाएँ उनमें पूर्णतः व्यक्त हो सकें, इसका प्रयास किया गया है।

**मूल्य : १५-०० रु०**


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


# हमारा १९९५ का बृहद् विशेषाङ्क :

# दर्शनानन्द-ग्रन्थ-संग्रह

यह ग्रन्थ 'दयानन्द चरित' आकार में २०×३०/८ लगभग ६०० पृष्ठ का सजिल्द होगा।

स्वामी दर्शनानन्द जी ट्रैक्ट लिखने की मशीन थे। जीवन में बहुत ट्रैक्ट लिखे। सब उर्दू में लिखे। अनेक विद्वानों ने उनका हिन्दी अनुवाद किया।

इस ग्रन्थ-संग्रह में हम दर्शनानन्द जी के ६४ ट्रैक्ट दे रहे हैं। ईश्वर विचार, ईश्वरप्राप्ति, वेद, मुक्ति, जीव का अनादित्व, गुरुकुल, भोला यात्री, द्वैतवाद आदि अनेक विषयों पर अत्यन्त खोजपूर्ण सामग्री इस ग्रन्थ में पाठकों को मिलेगी।

इस ग्रन्थ का सम्पादन करेंगे आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती।**

जिन मन्त्रों, सूत्रों और श्लोकों के पते नहीं हैं, उन्हें खोजकर देने का स्वामी जी का भरसक प्रयत्न रहेगा। आधुनिक साज-सज्जा से सुभूषित कलापूर्ण मुद्रण होगा। बढ़िया कागज होगा। इस ग्रन्थरत्न का मूल्य २५० रुपये होगा। परन्तु वेद-प्रकाश के सदस्यों को केवल १५० में मिलेगा। इसमें एक वर्ष तक वेदप्रकाश भी निःशुल्क मिलता रहेगा। विशेषाङ्क को भेजने का खर्च भी हम स्वयं वहन करेंगे।

ऐसा भव्य और दिव्य ग्रन्थ पहली बार छप रहा है। हम स्वामी दर्शनानन्द जी का सच्चा श्राद्ध कर रहे हैं। आर्य साहित्य में यह एक ठोस वृद्धि होगी।

हमारा 'वेदप्रकाश' के सदस्यों और पाठकों से निवेदन है कि वे स्वयं ग्राहक बनें और अन्यों को बनायें।

शीघ्रता करें। ग्रन्थ सीमित संख्या में ही छपेगा।

यदि पाठकों ने उत्साह दिखाया तो इसका दूसरा भाग भी देने का प्रयत्न करेंगे। यह अप्रैल ९५ में पाठकों को मिलेगा।

'वेद की मूल संहिताओं' के प्रकाशन योजना के लिए कई आर्यसमाजों ने हमारा उत्साह बढ़ाया है और इस योजना के लिए भी आर्यसमाज आगे आयें तो बृहद् विशेषांक प्रकाशित करने की योजना को बल मिलेगा तथा भविष्य में और अधिक ठोस योजनाओं पर कार्य करने की शक्ति मिलेगी।

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा
वेद प्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi